चकमक

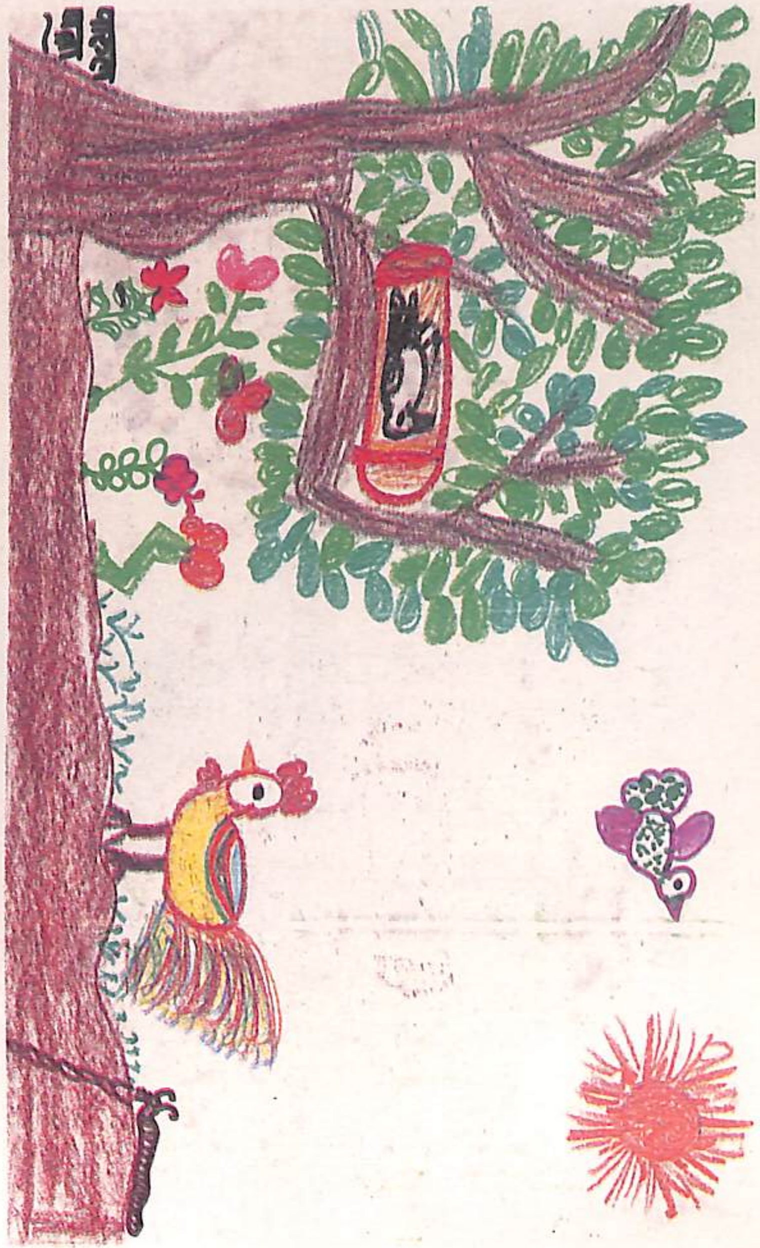
नवम्बर, 1997 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 7.00



मेरा पन्ना अंक



श्वेता श्रीवास्त्री, पाँचवीं, होशंगाबाद, मध्यप्रदेश


पारुल बत्रा, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-13 अंक-5 नवम्बर, 1997

सम्पादन

विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

विज्ञान परामर्श

सुशील जोशी

वितरण

कमल सिंह, मनोज निगम, अशोक सोकड़े

चकमक का चंदा

एक प्रति	सात रुपए
छमाही	40.00 रुपए
वार्षिक	75.00 रुपए
दो साल	140.00 रुपए
तीन साल	200.00 रुपए
आजीवन	750.00 रुपए

साथ में आपके किसी मित्र या परिचित को एक साल की मुफ्त सदस्यता।

आजीवन : 1000.00 रुपए साथ में एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर 50% छूट।

सभी मे डाक खर्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ़्ट/चेक से **एकलव्य** के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

काग़ज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016
(म.प्र.)
फोन : 563380

147 वें अंक में..

इनकी कविताएँ छपी हैं – तरुण सारथी, स्मिता श्रीवास्तव, प्योली, अनीता अग्रवाल, कमलेश्वर डहरे, कमल सिंह पंवार, धुनेश्वर शोरी, उमेश समरथ, आशीष महाजन और टीकेश्वर साहू।

इनकी कहानियाँ छपी हैं – अरविन्द जैन, जितेन्द्र सिंह सिकरवार, मधुबाला चौहान, जितेन्द्र सिंह राजपूत, नकुल कुन्देरा, अनुरुचि पांडे, प्रीति महावीर, सुबोध साकल्ले, बसोरी लाल चौधरी, पुष्पम कुमारी, कमल सिंह चौहान और स्वीटी।

इनकी पहेलियाँ छपी हैं – बन्टी, महेन्द्र महाले और अनिल तायड़े।

इनके चित्र छपे हैं – रीना यादव, मिताली तिवारी, उर्मिला, अनीता फिलोमिना, राजकुमार विश्नोई, गंगाराम आठिया, इरा, शुभ्रा पंवार, संत प्रसाद त्यागी, संतोष कुमार सूर्यवंशी, नंदकिशोर सेन, अनिल चौधरी, सुनीता फिलोमिना, शशांक खत्री, विनोद सक्सेना,भाश्वर, कैलाशचन्द्र बड़ैया, चम्पालाल कुशवाहा, ऊषा शर्मा, समन पायसिम, विजेन्द्र सोनगरे, वर्षा शर्मा, आशीष कुमार, नीलोफर कुरैशी, अबरार कुरैशी, ओमप्रकाश मेघवंशी, अपूर्वा सिन्हा, सुनन्दा, रामकृष्ण महाजन, एकांश राठौर, अमन कपूर, अतुल गुप्ता, श्वेता पंवार, राहुल चौबे, निर्मल आदिवासी, अलका मिश्रा, कुलदीपक निषाद, हेमेन्द्रसिंह कलम, रुकसाना, यास्मीन, प्रमोद साकल्ले, नीलम पाटीदार, देविका शर्मा, निर्मल कुमार गोयल, निर्मला बघेल, अलका डडसेना, सुखदेव प्रसाद गुर्जर, संजय कुमार चौधरी, सुभाष मुरजी वसावे, प्रतीक तनेजा, प्रकाश कुलहरी, स्वाति श्रीवास्तव, पारुल बत्रा और रूपाली साहू।

धारावाहिक

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण चित्र

एकांश, पाँच वर्ष, जांजगीर, बस्तर, म. प्र.

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात

तो यह रहा तुम्हारा अपना यानी 'मेरा पन्ना अंक'। वैसे तो लगभग हर साल तुम्हारी रचनाओं पर आधारित एक अंक निकलता रहा है। पिछले चार-पाँच साल से अनजाने में ही नवम्बर का अंक 'मेरा पन्ना अंक' बन जाता है। अब यह संयोग ही है कि इसी महीने में बाल दिवस यानी हमारे प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिन भी होता है।

नेहरू जी बच्चों से बहुत स्नेह करते थे। उनके इसी स्नेह के कारण उनका जन्म दिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। लेकिन, नेहरू जी शायद केवल इतना ही नहीं चाहते थे। वे चाहते होंगे कि, 'बच्चों के बारे में, उनके लालन-पालन के बारे में, उनके भविष्य के बारे में ठीक से सोचा जाए। इन सब बातों पर गम्भीरता से ध्यान दिया जाए।'

सच तो यह है कि चाहे नेहरू जी का जन्मदिन हो या गाँधी जी का या फिर डॉ. राधाकृष्णन का। सभी केवल उसी दिन उन्हें और उनकी बातों को याद करते हैं। और, फिर अगले ही दिन अगले साल तक के लिए भूल जाते हैं। भूलने की यह परम्परा हमें बदलना है। तुम्हें अपने बारे में केवल बाल दिवस के दिन ही नहीं बल्कि हर पल समझना-सोचना है। औरों को अपने बारे में सोचने पर मजबूर करना है।

चकमक भी अपने जन्म से ही तुम सबके बारे में बड़ों को गम्भीरता से सोचने-समझने के लिए चेताती रही है। और, अब तो चकमक भी तेरहवें साल में प्रवेश कर गई है - यानी किशोर उम्र में। किशोर उम्र का तकाज़ा होता है - चीज़ों को, घटनाओं को, समाज की गतिविधियों को हर पहलू से परखना, समझना। अपने किशोर साथियों से चकमक यही अपेक्षा रखती है।

तुम जानते हो कि आज़ादी की लड़ाई में बड़ों से लेकर बच्चों तक सभी ने भाग लिया था। इस लड़ाई में अनगिनत ऐसे शहीद हुए, जिन्होंने अपनी किशोर उम्र भी पूरी नहीं की थी। इस बाल दिवस पर ऐसे सब किशोर शहीदों को चकमक का सलाम।

● चकमक



देविका शर्मा, सात साल, रायपुर, म. प्र.

पाठक लिखते हैं

लगातार तीन-चार साल से आपके द्वारा निःशुल्क रूप से हमें 'चकमक' का स्थाई सदस्य बनाया गया है। जिससे हमें हर माह चकमक मिलती है। मैं इसे आठ-दस लोगों को शौक से पढ़ते-पढ़ाते रहता हूँ। अगस्त तथा सितम्बर के अंक मिले।

सितम्बर अंक के काग़ज़ में बहुत परिवर्तन हुआ है। शायद महँगाई के कारण। वैसे आपका कागज़ व छपाई बहुत सुन्दर व निर्दोष रहती है।

आपकी तरह हमें दस-पन्द्रह सम्पादकों, लेखकों, प्रकाशकों द्वारा पुस्तकें, मासिक, साप्ताहिक वगैरह नियमित उपहार स्वरूप मिलती रहती है। यहाँ उसका सभी बन्दी भाई लाभ लेते हैं।

अगस्त अंक में तितलियों की अनूठी जानकारी देकर व सितम्बर अंक में मंगल ग्रह के बारे में बताकर नए लोक से दोस्ती करवाई, धन्यवाद!

नन्हे-मुन्नों की मौलिक आपबीती, कहानियाँ, कविताएँ व चित्र को आप हूबहू प्रकाशित करके सच में एक अनूठा कार्य करते हैं। इस सबके लिए भी आभार।

चित्रकथा 'बिल्ली के बच्चे' भी खूब भाई। 'बुलबुले का एक दिन' पढ़कर तो मज़ा ही आ गया।

भूकम्प के बारे में प्रतिक्रिया भी दिल दहला देती है। 'किस्सा-बुरातीनो' का इतना अच्छा नहीं लगता। विज्ञान जगत को साथ लेकर शायद बच्चों के लिए आपकी एकमेव पत्रिका है। इसी तरह प्रगति के पथ पर चकमक चमकती रहे।

❑ **राजकुमार गुप्ता, नाशिक रोड बन्दीशाला, नाशिक, महाराष्ट्र**



अतुल गुप्ता, उमरिया, शहडोल, म. प्र.

यहाँ से काटें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक

भेजना शुरू करें–

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

सदस्यता शुल्क रु. ....

.... माह/वर्ष

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

छह माह :	40.00 रुपए
एक साल :	75.00 रुपए
दो साल :	140.00 रुपए
तीन साल :	200.00 रुपए
आजीवन :	750.00 रुपए *
आजीवन :	1000.00 रुपए ◦

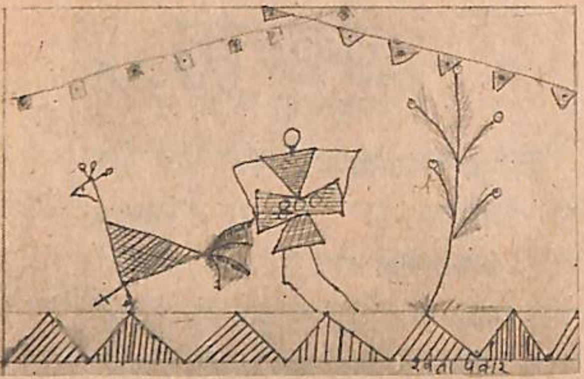
* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

◦ इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से '**एकलव्य**' के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।



श्वेता पंवार, सेंधवा, म. प्र.

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन

....

....

यहाँ से काट लें

सितम्बर, 1997 का अंक प्राप्त हुआ। मंगल ग्रह पर लिखा लेख काफ़ी अच्छा लगा। चित्रकथा 'बिल्ली के बच्चे' अच्छी लगी। बच्चों को चित्रकथा पढ़ना अच्छा लगता है। अगर आप लोग हर माह चकमक में चित्रकथा छापें तो चकमक और चमकने लगेगी।

❑ **मोन्टी शुक्ला, फरीदाबाद, हरियाणा**

चकमक में आप लोगों ने बाल कविताओं का स्तर बना के और बचा के रखा हुआ है। वरना बाल कविता के नाम पर अधिकांश तुकबन्दी और चुटकुले परोसे जा रहे हैं।

गिरिजा कुलश्रेष्ठ की 'बड़ा ताल' और नवीन सागर की 'उड़ो-उड़ो' कविताएँ अलग ढंग की और अच्छी कविताएँ थीं। कवियों को बधाई।

❑ **श्याम सुशील, दिल्ली**

मैं अपनी रचनाएँ बहुत बार भेज चुका हूँ, पर अभी तक एक बार भी उनमें से कुछ भी नहीं छपा है। कृपया इस चित्र को ज़रूर छापें जिससे मेरा मनोबल बढ़े। तथा ये मेरा लिखा हुआ नहीं है। मेरे भइया ने ये चिट्ठी लिखी है। मैंने केवल एक सुन्दर चित्र स्वतंत्रता दिवस पर बनाया है। कृपया उसे ज़रूर छापें। चिट्ठी बैरंग इसलिए भेज रहा हूँ, कि मम्मी-पापा बोलते हैं, कि रचनाएँ छपती नहीं हैं तो तू क्यों भेजता है। इसलिए यह चित्र छुपकर भेज रहा हूँ।

❑ **सन्त प्रसाद त्यागी, दूसरी,**
टिमरनी, होशंगाबाद

मैंने चकमक के पिछले चार-पाँच अंक पढ़े हैं। यह बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक पत्रिका है, और इसमें आप बच्चों की रचनाएँ भी छापते हैं।

तीन वर्ष पूर्व जब मैं छठवीं कक्षा में थी, तब मैंने कुछ कविताएँ लिखी थीं और उन्हें छपने के लिए भेजने की बस सोचती रही हूँ। अब चकमक पढ़ने के बाद आत्मविश्वास बढ़ने पर उनमें से एक कविता मैं इस उम्मीद के साथ भेज रही हूँ कि शायद आपको पसंद आएगी और आप उसे छापेंगे।

❑ **कृति अग्रवाल, नौंवी, तेज़पुर, असम**

पत्रिका में प्रकाशित होने वाले बच्चों के चित्र तो बेहद ही सजीव होते हैं, हाँ उनकी रचनाओं को समुचित स्थान नहीं मिलता। काफी समय से आपने मेरा पन्ना विशेषांक भी नहीं निकाला।

❑ **दयाकृष्ण पांडे, जाखनदेवी,**
अल्मोड़ा, उ.प्र.

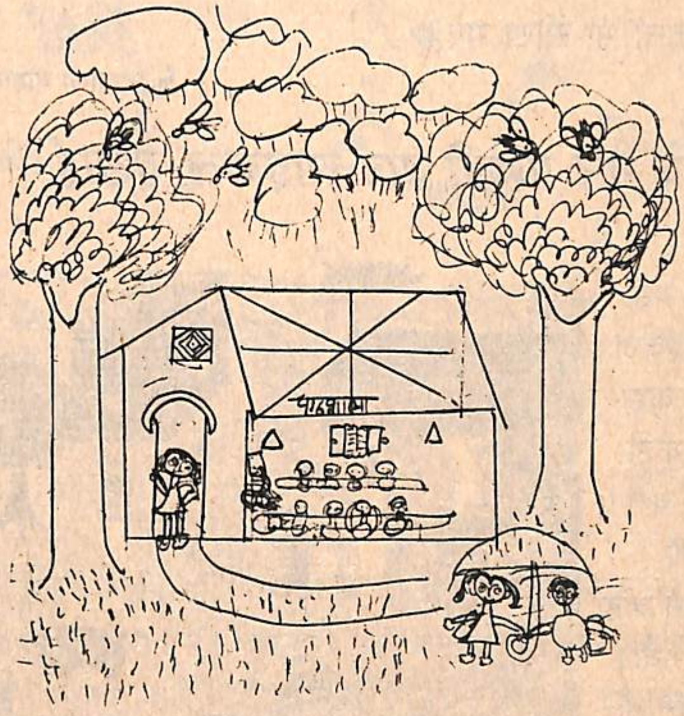
पहेलियाँ

एक परी है दुबली पतली
काला टोप वह पहनती
टोप उतार करे उजाला
पर अंधेरे में वह रहती

आसमान में वे उड़े
वृक्ष पर घोंसला नहीं बनाए
रहने वह जमीन पर आए
तूफान से सदा घबराए

बन्टी, पांचवीं ,बड़ौदा, गुजरात

एक दिन की बात



यास्मीन, आठवीं, धार, म. प्र.

एक दिन मैं और मेरा दोस्त स्कूल जा रहे थे। तो बस नहीं रुकी। तो हम दोनों ने तय किया कि स्कूल पैदल जाएँगे। तो हम लोगों ने चलना शुरू किया। बीच में भयंकर जंगल पड़ता था। तो मेरा दोस्त भागचन्द डरने लगा। तो हमने अगल-बगल देखा। तो दो साइकल सवार जा रहे थे तो हमने कहा कि हम दोनों को स्कूल तक छोड़ दो। तो उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे बच्चे हैं ले चलते हैं। फिर हम लोग स्कूल गए। तो स्कूल में टीचर पढ़ा रहे थे तो वे बोले इतनी देर क्यों हो गई? तो हम दोनों ने सारी बात टीचर को बता दी। जिससे टीचर ने हम लोगों को बहुत डाँटा कि अगर जंगल में शेर मिल जाता तो तुम्हारी क्या हालत होती।

अरविंद जैन, नौवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

मेरा पन्ना

साइकल सीखी

बात उन दिनों की है। जब हम चारों सहेलियाँ गर्मी की छुट्टियाँ बिता रही थीं। एक सहेली ने कहा, 'क्यों न हम साइकल सीखें।' यह बात चारों सहेलियों को समझ में आ गई। चारों सहेलियों ने किराए पर साइकल खरीदी। हम चारों सहेलियों में से सिर्फ एक को ही साइकल चलाना आती थी। उसने हमें साइकल सिखाना शुरू किया। उसने मुझे साइकल पर बैठा दिया और कहा, 'पैडल मार।' मैंने पैडल मारा तो साइकल आगे बढ़ी। आगे जाकर मैंने पैडल नहीं मारा तो मेरे पैर में लग गई। मैं कई महीने तक बिस्तर पर पड़ी रही। दूसरी सहेली घाटी नहीं चढ़ा पाई और गिर जाने पर उसका घुटना फूट गया। तीसरी सहेली हाथ छोड़कर चला रही थी तो उसके भी हाथ में चोट आ गई। हम तीनों सहेलियों ने ठीक हो जाने पर साइकल सीख ली। और एक दूसरों को बैठाकर चलाना भी सीख गए।

मधुबाला चौहान, आठवीं, धार, म.प्र.

जब मैंने पहली बार साइकल चलाई

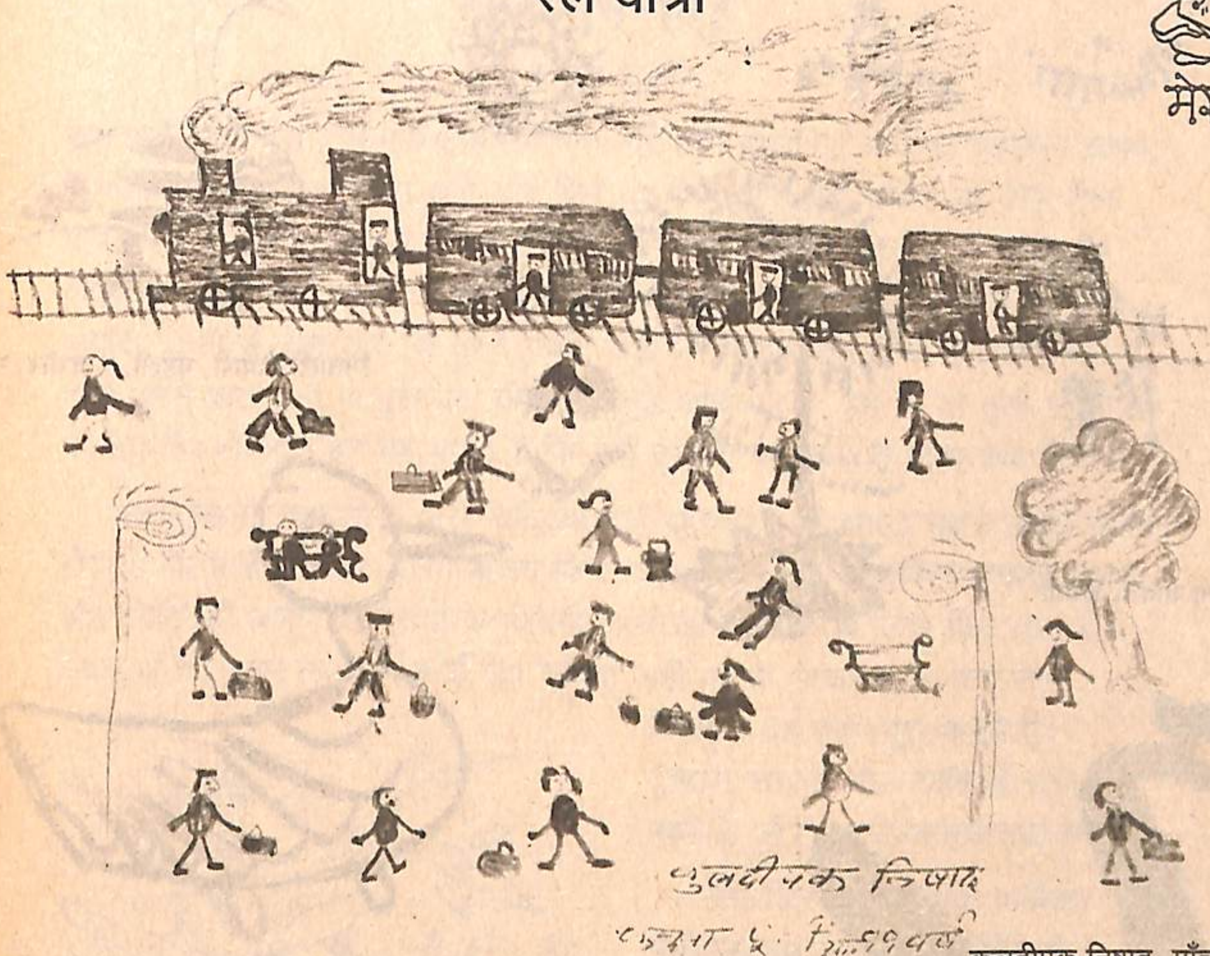
एक बार मैं मेरे दोस्त के यहाँ गया। उससे कहा मुझे साइकल चलाना सीखाओगे। उसने कहा- हूँ, पर गिर पड़े तो? मैंने कहा, नहीं गिरूँगा। उसने कहा, चलें। मैंने कहा, चलो। वह अपनी साइकल लाया। फिर उसने कहा, साइकल पर बैठ। मैं बैठ गया। उसने कहा, शुरू करो। मैंने हाँ कर दी। उसने पीछे पकड़ लिया। मैंने साइकल चलाई। थोड़ी देर बाद उसने छोड़ दी। उसने कहा चलाओ। इतने में तो मैं गिर पड़ा, मेरे पैर में चोट आई। और सिर पर भी चोट आई। फिर मुझे डॉक्टर को दिखाने ले गए। डॉक्टर ने मेरे सिर और पैर पर पट्टी लगाई और कहा बेटा तुम दो चार दिन तक ज़्यादा चलना फिरना मत।



नीलम पाटीदार, नौवीं, मेघनगर, झाबुआ, म. प्र.

जितेन्द्र सिंह राजपूत, सातवीं, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.

रेल यात्रा

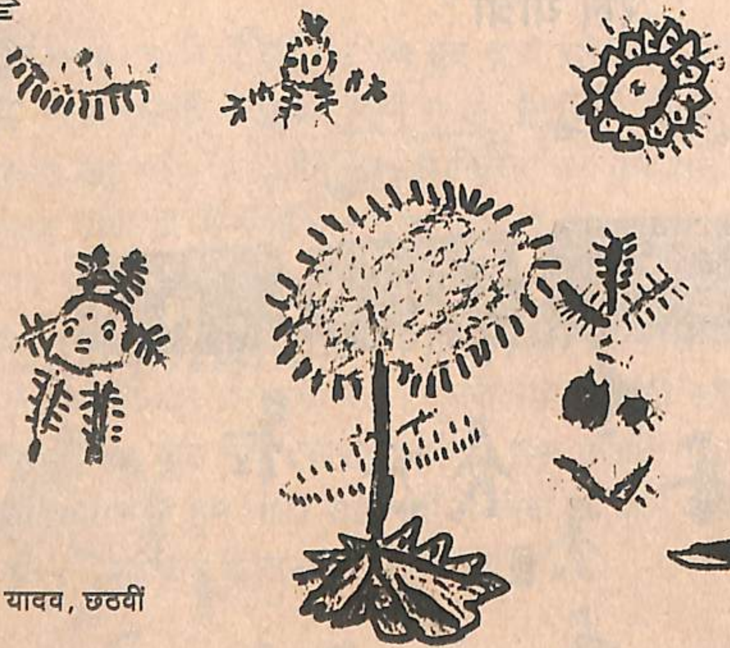


कुलदीपक निषाद, पाँचवीं
(कुलदीपक ने अपना पता नहीं लिखा)

एक बार मैं अपनी मम्मी के साथ रेलगाड़ी में बैठकर मुरैना जा रहा था। बीच-बीच में रेलगाड़ी स्टेशन पर रुकती। मेरी मम्मी मुझे बार-बार कह रही थी कि हर स्टेशन पर मत उतरो, कहीं गाड़ी चल दी तो फिर नीचे ही रह जाओगे। पर मैंने मम्मी का कहा नहीं माना। जब अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो मैं नीचे उतरकर घूमने लगा। इतने में गाड़ी चल दी तो नीचे ही रह गया। मैं खूब रोया। फिर एक आदमी ने मुझे रोते हुए देखा। उसने मुझसे पूछा, तुम कौन हो? मैंने सब कुछ बता दिया। फिर वह मुझे स्टेशन मास्टर के पास ले गया। स्टेशन मास्टर ने मुझसे कहा, घबराओ नहीं अभी ल्होरी के लिए गाड़ी आ रही है, तुम उस गाड़ी से चले जाना। उन्होंने मुझे एक आदमी के सुपुर्द कर दिया जो ल्होरी के पुरा जा रहा था। और मैं घर आ गया।

जितेन्द्र सिंह सिकरवार, ल्होरी का पुरा,
मुरैना, म. प्र.







मिताली तिवारी, पहली, मन्दसौर, म. प्र.

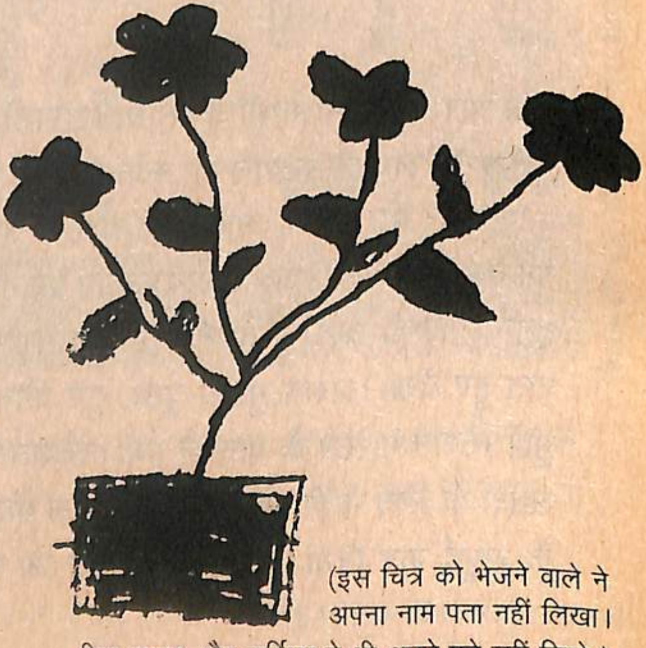
रीना यादव, छठवीं



उर्मिला



अनीता फिलोमिना, भोपाल, म. प्र.





राजकुमार विश्नोई, आठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

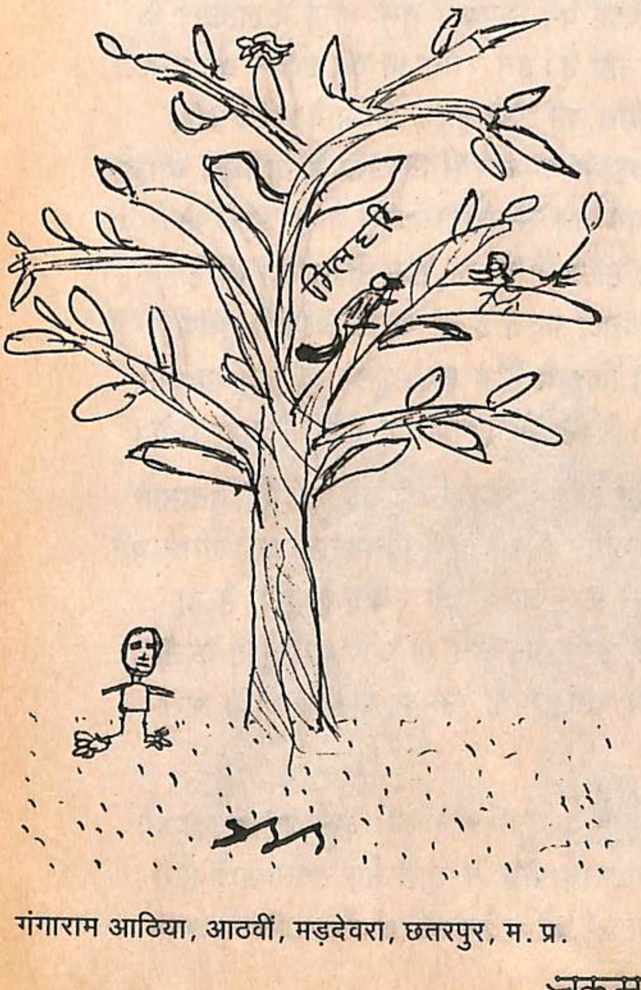
(इस चित्र को भेजने वाले ने अपना नाम पता नहीं लिखा। रीना यादव और उर्मिला ने भी अपने पते नहीं लिखे।)

बुरा मान गए?

कविता सुरेश

क्यों भाई, क्यों बुरा मान गए! तुम्हारी रचना नहीं छपी इसलिए? कोई तो इसलिए ख़फ़ा है क्योंकि उसकी एक रचना छपी और फिर दूसरी, तीसरी नहीं छपी। तुम लोग चित्र बनाते हो, कविता या कहानी लिखते हो और हमें भेजते हो कि चकमक में छपे। लेकिन, जब वो नहीं छपती तो तुम्हें बुरा लगता है, है न। और बुरा लगता है तब भी, जबकि किसी से पूछा जाए कि तुमने रचना कहीं से नकल तो नहीं की है। भई, जिस तरह हमसे रूठ जाने या बुरा मान जाने का तुम्हें अधिकार है, हमें भी तो तुम्हें मनाने का हक है। तो आज हम यह बताते हैं कि यहाँ तुम्हारी रचनाओं के साथ क्या होता है।

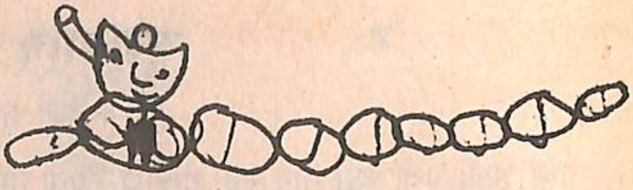
जब तुम्हारी रचनाओं से भरी चिट्ठियाँ यहाँ पहुँचती हैं तो हमारा सबसे पहला काम होता है कि उन्हें छाँटकर अलग-अलग किया जाए। चित्र अलग, कविता-कहानी अलग और चिट्ठियाँ अलग। चिट्ठियों के जितनी जल्दी हो सके जवाब लिख दिए जाते हैं। रचनाओं को चुनने का काम कोई एक व्यक्ति नहीं करता, चकमक के कई लोग मिलकर यह काम पूरा करते हैं। तुम्हारी कहानी और कविताएँ सभी पढ़ते हैं और अपनी-अपनी राय देते हैं।



गंगाराम आठिया, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

जैसे किसी ने हमें एक कविता भेजी जो हम सभी को अच्छी लगी। लेकिन एक बात सभी के मन में आई कि क्या यह कविता भेजने वाले ने ही लिखी है? उसने कहीं से इसके लिए मदद ली या कहीं से देखकर तो नहीं लिखी है? इस तरह के सवाल जब हमारे मन में उठते हैं तो शंका दूर करने के लिए हम रचना भेजने वाले को ही लिखेंगे न! और अगर यह सवाल तुमसे चिट्ठी लिखकर पूछ लिए जाएँ तो तुम्हें बुरा लगता है। और मान लो जो रचना हमें अच्छी लगे और हमें यह पता न हो कि यह नकल है और चकमक में छप जाए (ऐसा एक-दो बार हो चुका है) तब चकमक के और

पाठकों को क्या अच्छा लगेगा! और, उसके बारे में सोचो जिसकी असल में वह रचना है, उसे कैसा लगेगा?



इरा, पाँच वर्ष, भोपाल, म. प्र.

जब तुम्हारी रचनाएँ हमें मिलती हैं तो उन्हें देखने और पढ़ने के बाद हम तुम्हें चिट्ठी लिखते हैं। आमतौर पर चिट्ठियों में लिखा जाता है कि 'तुम्हारी रचना ठीक है, और कोशिश करो।' इससे हमारा मतलब होता है कि तुम अच्छा लिख सकते हो या अच्छे चित्र बना सकते हो। लेकिन, अभी और ध्यान देने की ज़रूरत है, जो कि तुम कर सकते हो। हर कोई अपने आसपास के वातावरण से देख-सुनकर कुछ लिख सकता है, चित्र बना सकता है। हमें ऐसी ही रचनाओं की तलाश रहती है जो कि तुम अपने मन से, अपने अनुभव से तैयार करते हो। जिसमें तुम अपने दिल से सोची हुई कोई बात बताते हो और उसे अपनी कल्पना से आगे बढ़ाते हो।

तुम्हारी इस तरह की रचनाओं को पढ़कर हमें बहुत खुशी होती है कि तुम इस दुनिया, अपने घर, परिवार, स्कूल के बारे में अपने विचार रखते हो, उन पर सोचते हो। तुम्हारी रचनाओं – कविता, कहानी या चित्रों को छापकर तुम्हें कोई कलाकार के रूप में प्रसिद्ध करवाने की हमारी कोई मंशा नहीं है। इन रचनाओं को छापने का हमारा उद्देश्य है कि तुम्हारी इस स्वाभाविक अभिव्यक्ति को और लोग भी जानें। जब कोई अपनी सोची हुई किसी बात को कविता या कहानी के रूप में लिखता है या चित्र बनाता तो उसे कितनी खुशी मिलती है। यह बात अपने मन से रचना करने वाले अच्छे से समझ सकते हैं। तुम्हारी ही तरह और कितने ही बच्चे हैं जो ऐसा ही सोचते तो हैं लेकिन लिखते नहीं। वे जब तुम्हारी लिखी रचनाएँ पढ़ते हैं तो अपने आपको तुमसे जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। और जो खुद भी लिखते हैं वे एक-दूसरे के अनुभव और विचार जान सकते हैं। हमारी कोशिश भी यही है कि ऐसा चकमक के ज़रिए हो सके।

हमने ऊपर नकल की बात की थी। ज़ाहिर है हम नकल की हुई रचनाएँ चकमक में नहीं छापते तो तुम्हें इसका बुरा लगता है। अगर मैं यह कहूँ कि इसमें बुरा लगने की भला क्या बात है, तो अब इस बात पर बुरा न मान जाना। जो रचना तुम्हारी है ही नहीं, उसके न छपने पर बुरा क्यों लगे? और अगर वह छप भी जाए तो खुशी कैसी? लेकिन, जो रचनाएँ नकल नहीं होतीं, फिर भी नहीं छपतीं, उनके बारे में थोड़ी बात करते हैं।

चकमक में हर माह अन्दाज़न सौ से डेढ़ सौ कविता-कहानियाँ और लगभगदो सौ से ढाई सौ चित्र आते हैं। इनमें से हर बार औसतन पाँच से सात नए रचनाकार होते हैं। हमारी कोशिश यह होती है कि नए रचनाकारों की रचनाओं को ज़्यादा से ज़्यादा

स्थान मिल सके। तो, ज़ाहिर है कि जिनकी रचनाएँ पिछले किसी अंक में छपी हों उन्हें कुछ इन्तज़ार करना पड़ सकता है। यही बात नए विषयों पर लिखी रचनाओं और किसी विषय पर नई तरह से तैयार रचनाओं के बारे में भी होती है।

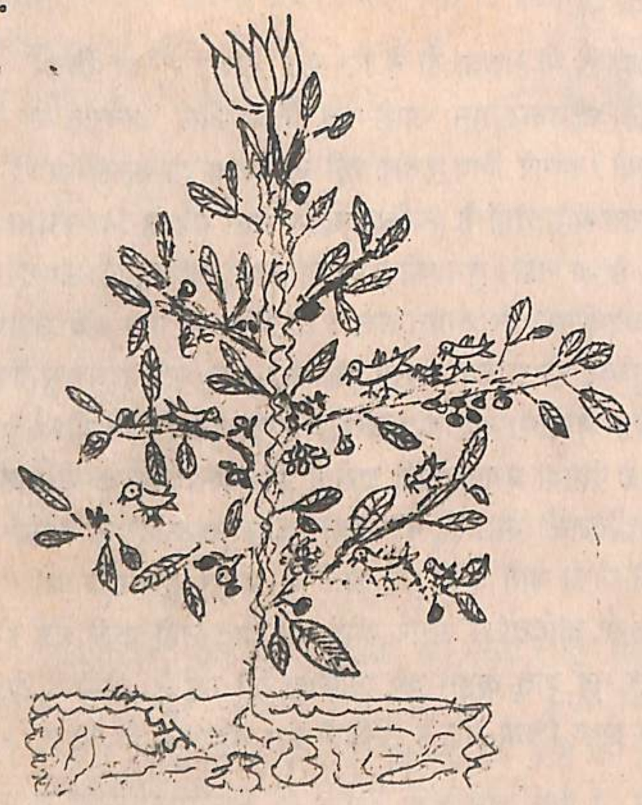
तुममें से कई के मन में यह सवाल भी उठता ही है कि कई बार ''सुन्दर चित्र'' और 'बहुत बढ़िया' लिखी गई रचना छोड़कर हम 'आड़े-टेढ़े चित्र' और 'अनगढ़-सी रचनाओं' को छाप देते हैं, भला क्यों? हमारे लिए रचना की सुन्दरता या अच्छे-अच्छे शब्दों से सजी रचना छापना ही मुख्य बात नहीं है। बल्कि ख़ास बात यह है कि रचना में से कोई बात उभरकर आ भी रही है या नहीं। तुम कोई रचना क्यों करते हो? अपने मन के किसी विचार, किसी बात को दूसरों के सामने रखने के लिए ही न ! अब अगर कोई रचना देखने-पढ़ने में बहुत सुन्दर हो लेकिन उसमें से कोई बात नहीं उभर रही हो तो ऐसी रचना के बारे में तुम क्या कहोगे, सोचकर देखो। आड़े-टेढ़े चित्रों और अनगढ़-सी रचनाओं में भी कई बार ज़्यादा प्रभावशाली तरीके से रचनाकार के मन की बात उभरकर सामने आती है। जैसे तितली के बारे में लिखी हुई बहुत सारी कविताएँ हमें मिलती हैं। ज़्यादातर में एक ही जैसी बातें कही गई होती हैं। बहुत सुन्दर शब्दों में, बढ़िया तुक मिलाकर लिखी गई किसी कविता में अगर कोई नई बात नहीं कही गई हो, और एक दूसरी कविता जिसमें कुछ नई बात कहने की कोशिश की गई है, लेकिन न तो तुक मिल रही है न अच्छे-अच्छे शब्द लिखे गए हैं, ऐसे में हम चकमक के लिए दूसरी वाली रचना ही चुनेंगे।

आख़िर में एक बात और, तुम्हारी रचनाएँ छपें या नहीं, हम तक तो वो पहुँच ही रही हैं। तुम्हारे मन की बात हमने जान ली, क्या तुम्हें इस बात की खुशी नहीं होती? हम तो यही चाहते हैं कि तुम्हारी रचनाएँ हम तक पहुँचें और हम उन्हें तुम्हारे और दोस्तों तक पहुँचा सकें। हमें लगता है कि अब तुम अपनी आपस की बातों पर बुरा नहीं मानोगे। नहीं मानोगे ना?



अमन कपूर, चार वर्ष, समलखा, पानीपत, हरियाणा

चिड़िया रानी



निर्मल आदिवासी, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

चीं चीं करके चिड़िया आई,
अपना नाच मुझे दिखलाई।
फिर मैंने दिया उसे दाना,
सुनाने लगी मुझे गाना।
अब चिड़िया रानी जाने लगी,
धीरे से मुस्काने लगी।
मैंने कहा फिर कल आना,
सुनाना मुझे नया गाना।
चिड़िया बोली कल आऊँगी,
कहानी भी सुनाऊँगी।
अब मैं घर जाती हूँ।
नई कहानी बनाती हूँ,
कल जब मैं आऊँगी,
वही कहानी सुनाऊँगी।

तरूण सारथी, छठवीं,
नगरनार, बस्तर , म. प्र.

पहेलियाँ

(1)

काले जंगल में काला शेर
बताओ जल्दी करो न देर।

(2)

थोड़े पानी को ललचाकर देख रहा कुछ सोच रहा,
रंग है काला, बुद्धि वाला, देखो कंकड़ जुटा रहा।

भेजने वाले ने नाम, पता नहीं लिखा।

(3)

रातों में वह अक्सर आता
कभी रुलाता कभी हँसाता
दुनिया भर की सैर कराता
बताओ वह क्या कहलाता।

(4)

देखो मुझे गोल हूँ मैं तो
सागर-झीलें-पर्वत मुझपर
दिखती नहीं पर घूमती हूँ मैं
जंगल-शहर-गाँव है मुझपर

महेन्द्र महाले, अनिल तायड़े, आठवीं, मोहद,
बुरहानपुर, खण्डवा, म. प्र.





आम का पौधा

राम कक्षा तीन में पढ़ता था। उसे पौधे लगाने का बहुत शौक था। परन्तु उसके घर में कच्ची जगह नहीं थी। इसलिए वह पौधे गमलों में ही लगाता था। गर्मियों के दिन थे। जब राम का स्कूल एक मास के लिए बन्द था। उसने अपने पिता से जिद की कि वह अपनी मौसी के घर छुट्टियाँ व्यतीत करने जाएगा। मौसी उसे बहुत प्यार करती थी। राम अभी बहुत छोटा था फिर भी उसके पिता उसे मौसी के घर ले जाने के लिए मान गए। वे उसे मौसी के घर छोड़ आए। मौसी खाने के लिए उसे आम देतीं वह बहुत खुश होता। मौसी के घर तो बहुत कच्ची जगह थी। इसलिए मौसी ने अपने घर में आम का एक पेड़ लगाया हुआ था। राम उस पेड़ के मीठे-मीठे आम खाकर बहुत खुश होता था। तब राम ने मौसी से आम का पेड़ लगाने की जानकारी हासिल की। वह मौसी से यह पूछना ही भूल गया कि, ''क्या आम का पौधा गमले में लग जाता है। और क्या आंम का पौधा गमले में ही पेड़ बन जाता है। आम के पेड़ पर फल कितने समय में लग जाते हैं।''

उसकी छुट्टियाँ खत्म होने को थीं, उसके पिता जी उसे घर ले गए। राम ने अपने घर में आम का एक पौधा एक गमले में लगा दिया। वह यह सोचकर उसे रोज पानी देने लगा कि यह पौधा गमले में ही पेड़ बन जाएगा। और उस पर मीठे-मीठे फल लगेंगे। वह खुद भी आम खाएगा और मौसी को भी भेजेगा।

अलका मिश्रा, जोगश्वरी, मुम्बई, महाराष्ट्र

नकुल कुन्दरा, तेरह वर्ष, जालन्धर, पंजाब



अल्मोड़ा बना हिमालय

आसार किसी को नजर नहीं आ रहे थे कि सीधे बारिश होते ही बरफ गिरेगी। लेकिन रोज की तरह सुबह आज भी आसमान को बादलों ने घेरा था। मम्मी-पापा आपस में कह भी रहे थे कि बरफ गिर सकती है। मैंने पापा-मम्मी से कहा भी - अभी बारिश तो हुई नहीं सपने देखोगे बरफ के। उस समय मैं अपनी भविष्यवाणी पर नाज भी कर रही थी। तभी अचानक बारिश शुरू हो गई, बारिश धीरे-धीरे रूई के फाहों में बदल गई। आश्चर्य, ये लगभग आधी हथेली के बराबर थे। धीरे-धीरे ये इतनी तेजी से गिरने लगे कि लगा जैसे अल्मोड़ा ने ठंड के मारे सफेद चादर ओढ़ ली हो। मन उसमें नाचने का कर रहा था। पापा, मैं और मनु, विशी को घुमाने के बहाने चल पड़े।

बरफ अभी गिर रही थी। मैंने तीन स्वेटर एक जैकेट और एक गरम पेंट पहनी थी। मेरी बहन ने भी गरम कपड़े पहने थे। हमने देखा कि डी. एम., एस. डी. एम. जीपों में अपने परिवार के साथ घूमने निकले थे। एक जीप में आगे से भी बरफ जमी थी। लोग जम के फिसल रहे थे। हम घर आधे घण्टे बाद पहुँचे। हमने विशी (हमारा कुत्ता) को भी आग सिकाई, बर्फ अभी भी गिर रही थी। इतनी तेज गिरती बर्फ मैंने पहली बार देखी। हमने इसके बाद बाहर का टेम्परेचर नापा यह -3 डिग्री (ऋण तीन डिग्री) था और बर्फ औसत एक फुट थी।

हमने मम्मी से छुपकर बरफ खाई। जब बर्फ थोड़ी रुकी हमने यहाँ के पेड़ों को गौर से देखा। मेरा मन किया कि मैं पेड़ों को हिलाकर उनके नीचे बैठ जाऊँ। मैंने पेड़ों में बंदरों को ठिठुरते और सड़क में मेढ़ों को ठिठुरते देखा। मन ऐसा किया कि इन सबको घर के अंदर बुला लूँ। अब मैं आपसे बिदा लूँगी, और अगले साल भी बर्फ का विवरण भेजने की कोशिश करूँगी। अच्छा तो तब तक बाय!

अनुरूचि पांडे, आठवीं, जाखनदेवी, अल्मोड़ा, उ. प्र.

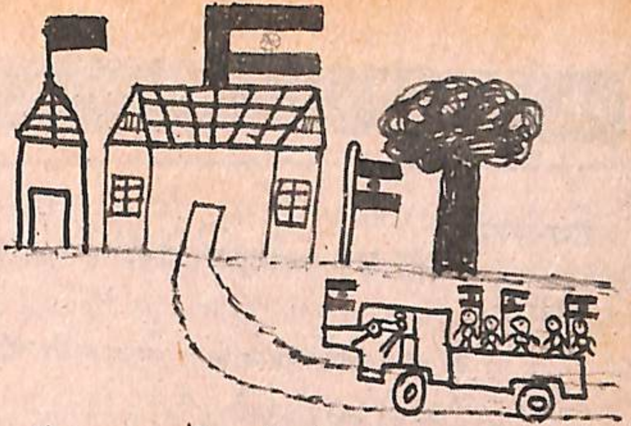
मेरी मैडम

मैं चिनौरी में रहती हूँ। मैं दूसरी कक्षा में पढ़ती हूँ। हमारी मैडम अच्छा पढ़ाती हैं। हमारी मैडम गाना गाने को कहती हैं। हम स्कूल में अंताक्षरी खेलते हैं। वे हमें बेटा कहती हैं। मैडम मुझे बहुत प्यारी लगती हैं। हम रोज स्कूल जाते हैं। हमारे स्कूल में हमें खाना मिलता है। मैडम कितनी अच्छी हैं, मैडम दिल की सच्ची हैं।

प्रीति महावीर, दूसरी, चिनौरी चारामा, बस्तर, म. प्र.



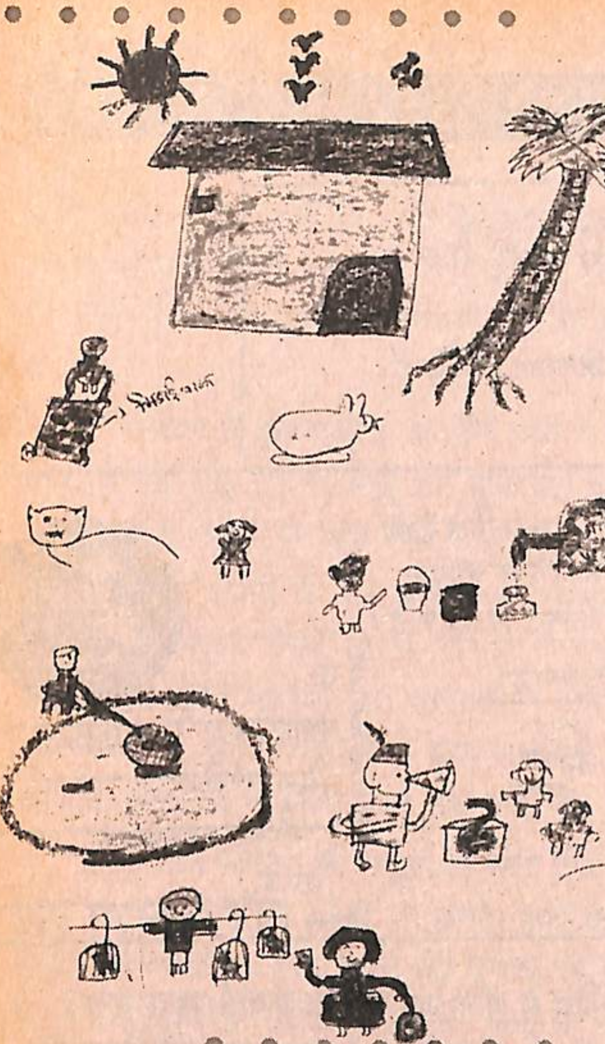
प्रमोद साकल्ले, 15 वर्ष, भाड़ूगाँव, होशंगाबाद, म. प्र.



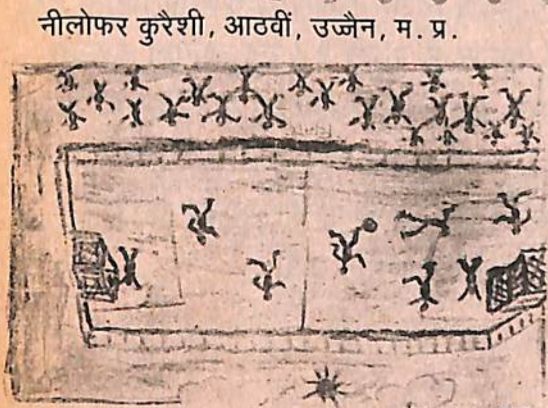
संत प्रसाद त्यागी, दूसरी, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.



संतोष कुमार सूर्यवंशी, नौवीं, होलीपुरा, गंधवानी, धार, म. प्र.



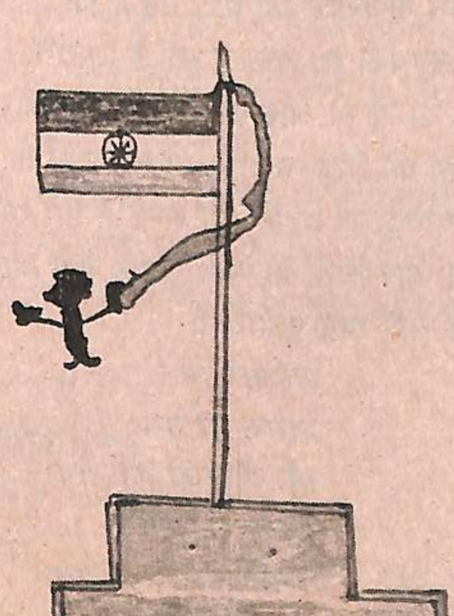
नीलोफर कुरैशी, आठवीं, उज्जैन, म. प्र.



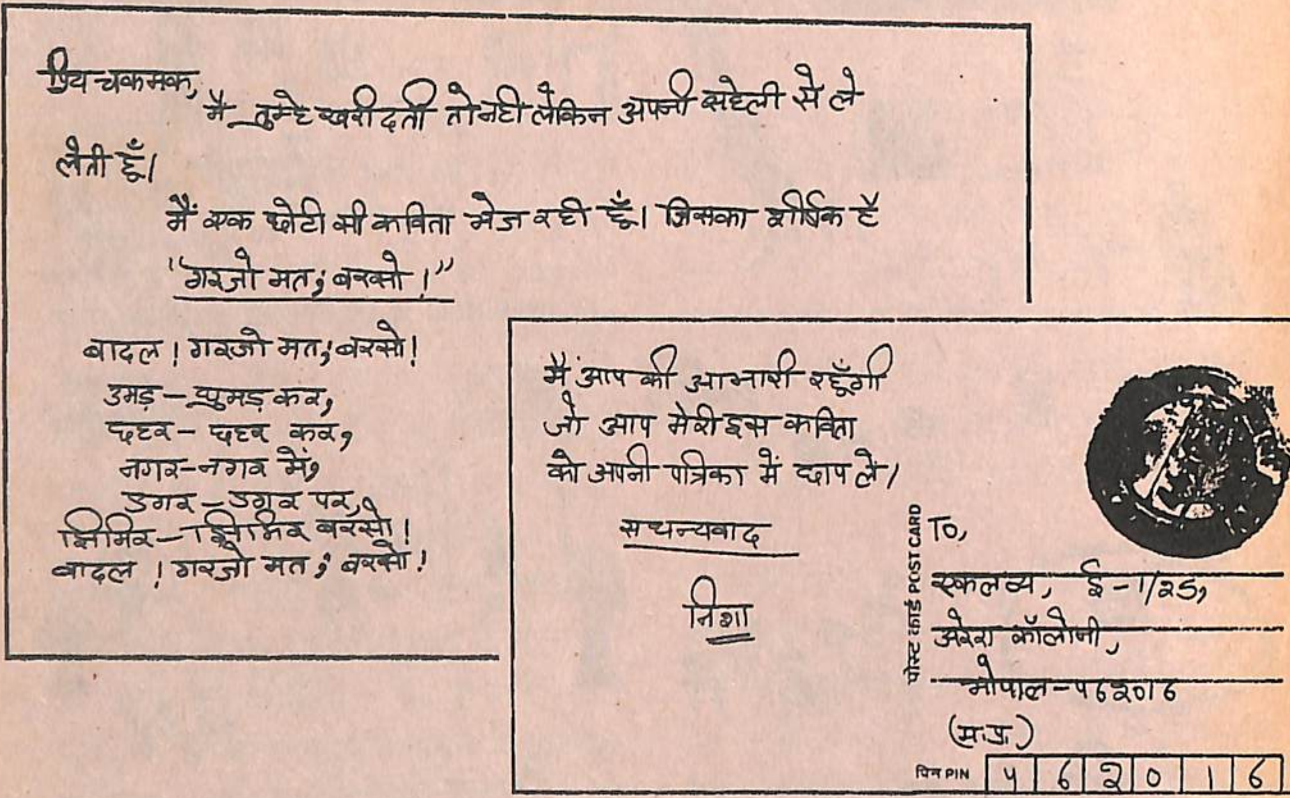
विनोद सक्सेना, पचोर, म. प्र.



ऊषा शर्मा, छठी, धार, म. प्र.



विजेन्द्र सोनगरे, छठी, उज्जैन



प्रिय चकमक, मैं तुम्हें खरीदती तो नहीं लेकिन अपनी सहेली से ले लेती हूँ।

मैं एक छोटी सी कविता भेज रही हूँ। जिसका शीर्षक है "गरजो मत; बरसो।"

बादल! गरजो मत; बरसो!
उमड़-घुमड़ कर,
घहर-घहर कर,
नगर-नगर में,
डगर-डगर पर,
झिमिर-झिमिर बरसो!
बादल! गरजो मत; बरसो!

मैं आप की आभारी रहूँगी जो आप मेरी इस कविता को अपनी पत्रिका में छाप लें।

सधन्यवाद

निशा

पोस्ट कार्ड POST CARD

To,
एकलव्य, ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म.प्र.)
पिन PIN 462016

यह पत्र यहाँ जैसा का तैसा छाप रहे हैं। क्योंकि इस पत्र में भेजी गई कविता वाकई बहुत सुन्दर है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि इस पत्र को भेजने वाली निशा ने और कुछ नहीं लिखा कि वह कितनी बड़ी है? क्या करती है? पढ़ती है तो कौन-सी क्लास में पढ़ती है? यह कविता उसकी अपनी है या किसी और की है। और तो और निशा ने अपना पता भी नहीं लिखा। यानी यह कविता और निशा की चिट्ठी चकमक में हम छाप तो रहे हैं पर उसे यह चकमक हम भेज भी नहीं पाएँगे। निशा की चिट्ठी के बहाने तुम सभी से हम यही कहना चाहते हैं कि अपनी सुन्दर-सुन्दर कविता, कहानियाँ और चित्रों के साथ अपना पूरा और सही नाम-पता ज़रूर लिखा करो।

पूरा और सही नाम-पता यानी

अपना नाम ....
क्लास या उम्र ....
माँ, पिताजी का नाम ....
मकान का नम्बर ....
गली का नाम या नम्बर ....
गाँव या शहर का नाम ....
डाकघर .... ज़िला ....
पिन कोड ....

गदर पार्टी

बड़ी धूमधाम से मनाई जा रही है हमारे देश में आज़ादी की पचासवीं सालगिरह। दूसरी ओर समाज में उठते-बैठते हमें कई लोग ऐसे भी मिल जाते हैं जो इस आज़ादी से परेशान नज़र आते हैं। कहते हैं कि, 'आज़ादी के परवानों ने ऐसी झूठी आज़ादी की ख़ातिर अपने प्राणों की आहुति नहीं दी थी।'

हो सकता है इस दलील के दोनों पक्षों में कुछ बातें सच हों और कुछ नहीं। पर अभी हम इस बहस में नहीं पड़ रहे हैं। अभी हम याद कर रहे हैं उन तमाम विचारधाराओं को जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया है।

स्वतंत्रता संग्राम के दौर में देश भर में कई सारे छोटे-छोटे समूह एकजुट हो रहे थे। संगठन बन रहे थे, विचार उभर रहे थे और ये विचार आदान-प्रदान के ज़रिये धारा रूप अख़्तियार कर रहे थे। इन विचारधाराओं और संगठनों ने लगातार नौजवानों को देश की आज़ादी की लड़ाई की ओर आकर्षित किया। बहुत सारे युवक-युवतियाँ और बच्चों ने इन समूहों, संगठनों से प्रेरणा लेकर आज़ादी के संघर्ष में अपनी जान तक लगा दी।

इन विचारधाराओं या समूहों को मोटे तौर पर तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है। एक वे जो शिक्षा का प्रचार करने, लोगों को उनके हकों के प्रति आगाह करने और सरकार से उन हकों को हासिल करवाने का काम करते थे। दूसरा समूह गाँधी जी तथा लोकमान्य तिलक जैसे लोगों का था, जो राजनैतिक तरीक़े से (नरमी और गरमी दोनों के उपयोग से) आज़ादी हासिल करने पर ज़ोर देता था। तीसरा समूह था हाथों-हाथ काम करने की दृढ़ इच्छा रखने वाले नौजवानों का। इसे क्रांतिकारी या इंकलाबी तरीक़ा कहा जाता था। यह समूह मरने-मारने, देश हित के लिए डाका डालने, ब्रिटिश खज़ाने लूटने आदि को भी उचित समझता था।

इस बार हम ऐसे ही एक समूह और उसके गठन के इतिहास के बारे में कुछ जानकारियाँ बटोर लाए हैं। यह समूह आमतौर पर गदर पार्टी के नाम से जाना जाता है। गदर पार्टी के बारे में भी पढ़ो और उससे जुड़े दो ऐसे नौजवानों के बारे में भी जिन्होंने उन्नीस-बीस साल की उम्र में ही आज़ादी की लड़ाई में अपनी जान न्यौछावर कर दी।

शुरुआत : गदर अख़बार और फिर पार्टी की

सन् 1912 के आसपास अमरीका में काम करने वाले भारतीय मज़दूरों ने गोरों के भेदभाव वाले रवैये के ख़िलाफ एकजुट होना शुरू किया था। शुरुआत बैठकों, सभाओं और भाषणों से हुई। लगभग साल भर बाद 21 अप्रैल, 1913 को अमरीका के ओरेगॉन राज्य के एस्टोरिया शहर में रहने वाले कई प्रवासी भारतीय क्रांतिकारियों ने एक सभा बुलाई। इस सभा में अमरीका में ब्रिटिश प्रभाव के कारण भारतीयों के साथ किए जाने वाले भेदभाव पर चर्चा हुई। सभा में शामिल अधिकतर लोग पंजाब के थे।

चर्चा के बाद इन लोगों ने एक साप्ताहिक अख़बार शुरू करने का फैसला किया। इस अख़बार का नाम रखा गया 'गदर', जिसका अर्थ है विद्रोह।

गदर अख़बार के इर्द-गिर्द धीरे-धीरे एक संगठन बनने लगा। पहले इस संगठन का नाम रखा गया 'हिन्दी एसोसिएशन ऑफ़ दि पैसिफिक कोस्ट ऑफ़ अमरीका', यानी 'अमरीका के प्रशान्त तट का हिन्दी संघ'। कुछ समय बाद इस नाम को अख़बार के नाम के अनुसार बदलकर 'हिन्दुस्तान गदर पार्टी' कर दिया गया।

गदर अख़बार पंजाबी, उर्दू और कभी-कभी मराठी में भी निकलता था। इसके अलावा अंग्रेज़ी, बांग्ला व अन्य भारतीय भाषाओं में भारतीय मुद्दों पर पुस्तिकाएँ भी निकाली जाती थीं। गदर पार्टी के ख़ास प्रकाशनों में 'गदर-दी-गूँज' नाम की देशप्रेमी कविताओं का एक संकलन बहुत मशहूर हुआ।

जब पहला विश्व युद्ध छिड़ा तो गदर पार्टी ने अपने सदस्यों से स्वदेश लौटकर इंकलाबी संग्राम में शामिल होने का आग्रह किया। इस आह्वान के जवाब में कई लोगों ने भारत लौटने की कोशिश की। गदर



गदर अखबार का एक मुख पृष्ठ।

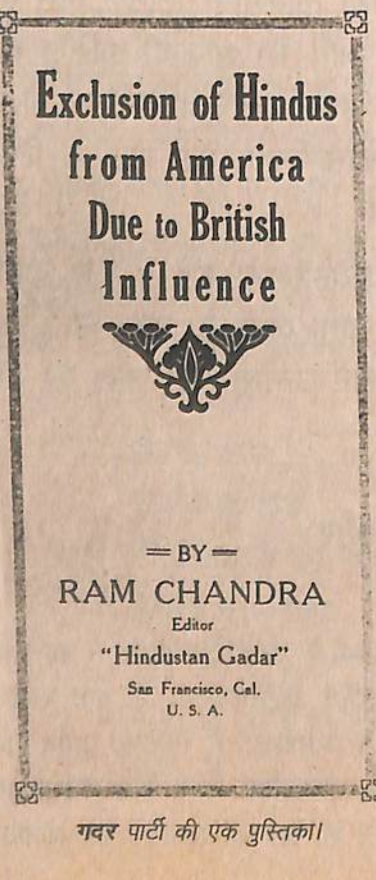
पार्टी के कई नेता इसी कोशिश में भारत लौटते ही 'डिफेन्स ऑफ़ इंडिया' कानून के तहत गिरफ़्तार कर लिए गए। लेकिन करतार सिंह सराभा, कांशीराम, विष्णु गणेश पिंगले, पृथ्वी सिंह, रहमत अली जैसे कई लोग बच निकले और पार्टी की गतिविधियाँ देश में चलाने लगे। बंगाल के रासबिहारी बोस के साथ मिलकर इन लोगों ने 19 फ़रवरी, 1915 के दिन अखिल भारतीय सैन्यवाहिनी विद्रोह की परिकल्पना की। लेकिन कुछ लोगों के विश्वासघात के कारण यह कल्पना साकार नहीं हो पाई। विश्वासघात करने वालों में फौज के जमादार बूटासिंह और अंग्रेज़ पुलिस गुप्तचर किरपालसिंह का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है। यह घटना 'पहला लाहौर षड़यंत्र' के नाम से जानी जाती है। इससे संबंधित कई लोग पुलिस या सेना के साथ हुई मुठभेड़ में मारे गए। इकसठ लोग पकड़े गए। इनमें से चौबीस लोगों को फाँसी और सत्ताइस लोगों को कालापानी की सज़ा हुई।

इन्हीं में प्रमुख थे दो युवा नेता - विष्णु गणेश पिंगले और करतार सिंह सराभा।

विष्णु गणेश पिंगले

विष्णु गणेश पिंगले का जन्म पूना के पहाड़ी प्रदेश में हुआ था। वे बचपन से ही बहुत भावुक स्वभाव के थे। घर वालों ने पिंगले को इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए अमरीका भेजा था। वहाँ उनका परिचय गदर पार्टी से हुआ और वे उसमें शामिल हो गए।

जब गदर पार्टी ने भारत लौटकर गुलामी के विरोध में सीधे काम करने का फ़ैसला किया तो ये



Exclusion of Hindus from America Due to British Influence

= BY =

RAM CHANDRA

Editor

"Hindustan Gadar"

San Francisco, Cal.

U. S. A.

गदर पार्टी की एक पुस्तिका।



विष्णु गणेश पिंगले

भी 1914 में भारत आ गए। भारत लौटकर पिंगले अपने घर न जाकर सीधे बंगाल पहुँच गए। वहाँ उन्होंने रासबिहारी बोस से मिलकर बंगाल के क्रांतिकारियों को पंजाब की हलचलों की सूचना दी। इस तरह इन दो समूहों में सम्बंध बने और क्रांतिकारी विद्रोह का काम तेज़ी से चलने लगा।

बंगाल से पिंगले काशी होते हुए पंजाब पहुँचे। पंजाब में पिंगले ने करतार सिंह सराभा के साथ मिलकर संगठन को मज़बूत करने का काम किया। चूँकि गदर पार्टी के कई बड़े नेता भारत आते हुए या आते ही गिरफ़्तार हो चुके थे इसलिए उस समय ये दो युवा कार्यकर्ता ही पंजाब के क्रांतिकारी आंदोलन की जान थे।

पंजाब और बंगाल के समूहों ने मिलकर अंग्रेज़ी फौज के भारतीय सिपाहियों को क्रांति की ओर खींच लाने की कोशिश की। इस सिलसिले में पहले 21 फ़रवरी और बाद में तारीख़ बदलकर 19 फ़रवरी, 1915 को पूरे भारत में सैन्यवाहिनियों का विद्रोह सोचा गया था। इसी की तैयारी में बनारस से पंजाब लौटते हुए पिंगले एक सिपाही के आश्वासन पर मेरठ छावनी में घुस गए। उनके पास बम तथा अन्य विस्फोटक सामग्री थी। परन्तु वह सिपाही विश्वासघाती निकला और पिंगले मेरठ के सैनिक बैरक में बम और डायनामाइट समेत पकड़े गए। अंग्रेज़ी अदालत में उनके ख़िलाफ मुकदमा चला और उन्हें फाँसी की सज़ा सुनाई गई। 17 नवम्बर, 1915 को उन्हें फाँसी दी गई।

करतार सिंह सराभा

करतार सिंह सराभा का जन्म 1896 में पंजाब में लुधियाना ज़िले के सराभा गाँव में हुआ था। वे अपने माता-पिता के इकलौते बेटे थे। जब वे बहुत छोटे थे तभी उनके पिता का देहांत हो गया। उनका लालन-पालन दादा ने किया। नौवीं कक्षा पास करने के बाद वे अपने चाचा के पास उड़ीसा चले गए। वहीं वे कॉलेज में पढ़ने लगे। इसी बीच कॉलेज की किताबों के अलावा उन्हें कई अन्य किताबों को पढ़ने का मौका मिला। वैसे पढ़ाई से ज़्यादा उनकी रुचि खेलों में थी। स्कूल के अन्दर या दूसरे स्कूलों के साथ खेले जाने वाले मैचों में जीत हासिल करने के लिए करतार सिंह जान लड़ा देते थे। यह 1910-11 का समय था। आज़ादी का आन्दोलन ज़ोरों पर था। इन सबका असर करतारसिंह पर पड़ना ही था।

इसी समय करतार ने आगे पढ़ाई के लिए अमरीका जाने की इच्छा ज़ाहिर की। घर वालों से अनुमति मिलने पर वे सोलह साल की उम्र में



करतारसिंह सराभा

सान्फ्रांसिस्को पहुँचे। अमरीका आज़ाद देश था। एक स्वाधीन देश का उन्मुक्त वातावरण उन्हें अच्छा लगा। लेकिन वहाँ भारतीयों तथा अन्य देशों के लोगों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता था। करतारसिंह यह सब देखकर बहुत दुखी होते थे। घर की याद आने पर गुलामी में जकड़े भारत का ख्याल आ जाता था उन्हें। इसी दौर में करतारसिंह एक कोमल हृदय वाले युवक से आज़ादी के लिए जीवन कुर्बान करने वाले दृढ़ निश्चयी नौजवान बने।

इन्हीं दिनों अमरीका में भारतीय मज़दूरों का संगठन बन रहा था। इस काम में प्रसिद्ध क्रांतिकारी लाला हरदयाल सिंह और भारत से निष्कासित क्रांतिकारी भगवान सिंह जुटे हुए थे। करतारसिंह को कैलिफोर्निया के बर्कले विश्वविद्यालय में दाखिला मिल गया था। वे एक ऐसे गैर-सरकारी छात्रावास में रहने लगे जहाँ तीस भारतीय छात्र रहते थे। इन छात्रों में कई सशस्त्र क्रांति की मदद से भारत के आज़ादी के बारे में सोचते थे।

एक बार लाला हरदयाल सिंह ने इन छात्रों के बीच बहुत ज़ोरदार भाषण दिया। इससे प्रेरित होकर करतारसिंह, डी. चेनैया और जितेन्द्रनाथ लाहिड़ी नामक तीन छात्रों ने देश की आज़ादी के लिए लड़ने का प्रण किया। इन लोगों ने भारतीय मज़दूरों के साथ-साथ छात्रों को भी संगठित करना शुरू किया। मई 1912 में इस संगठन के कुछ चुनिंदा लोगों ने एक ख़ास बैठक की और अपना सब कुछ हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए न्यौछावर करने की कसम खाई। इसके कुछ समय बाद ही 'गदर' अख़बार शुरू हुआ। करतारसिंह इसके सम्पादकीय विभाग में थे।

आंदोलन का काम ज़ोरों पर था। जगह-जगह सभाएँ, जलसे, भाषण आयोजित हो रहे थे। इनमें करतारसिंह सक्रिय रूप से शामिल रहते थे। 'गदर' के साथ-साथ छपने वाली पुस्तिकाओं को सभाओं में बाँटा जाता था। इसी बीच यूरोप में पहला विश्व युद्ध छिड़ गया। तब करतारसिंह ने ज़ोरों से देश लौटने का प्रचार किया। वे ख़ुद जहाज़ से कोलंबो (श्री लंका) पहुँचे। इसी कारण वे उस 'डिफेंस ऑफ़ इंडिया कानून' की गिरफ्त से बच गए, जिसमें भारत आने वालों की धर-पकड़ की जा रही थी।

देश लौटते ही उन्होंने अंग्रेज़ी हुकूमत की खिलाफत का काम ज़ोर-शोर से शुरू कर दिया। दिसम्बर 1914 में मराठा नौजवान विष्णु गणेश पिंगले भी उनके साथ जुड़ गए। सैन्य वाहिनी विद्रोह की योजना बनाने में इन दोनों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। लेकिन यह योजना सफल नहीं हो पाई।

जब योजना में शामिल लोगों की धर-पकड़ शुरू हुई, तो रासबिहारी बोस ने पंजाब के नेताओं को गिरफ़्तारी से बचने के लिए भूमिगत हो जाने (छिपने) की सलाह दी। बोस खुद भेस बदलकर बनारस चले गए। तीन क्रांतिकारी जगतसिंह, हरनामसिंह और करतारसिंह अफगानिस्तान जाने के लिए लायलपुर (अब पाकिस्तान में) जा पहुँचे। वहाँ से वे पेशावर होते हुए, होशियारी से सरहद पार कर गए। आगे बढ़ने से पहले सुस्ताने के लिए एक पहाड़ी नदी के किनारे बैठ गए। वहाँ एक गीत गाते हुए करतार को यह सूझा कि उन्हें अपने अन्य साथियों को मुसीबत में छोड़कर, इस तरह भागना नहीं चाहिए था। यह बात उन्होंने अपने साथियों से कही। उन दोनों को भी यह बात ठीक लगी। तीनों ने तय किया कि देश लौटने पर भले ही फाँसी का फन्दा मिले, वे इस तरह नहीं भागेंगे। और तीनों वापस भारत लौट आए।

करतारसिंह को लाहौर के सिरगोधा गाँव के पास से गिरफ़्तार किया गया। उन पर लगाए गए आरोप का मुकदमा डेढ़ साल तक चला। मुकदमे के दौरान उन्हें जब-जब अदालत में अपना बयान देने का मौका मिलता, वे बहुत जोशीले इकबालिया बयान देते।

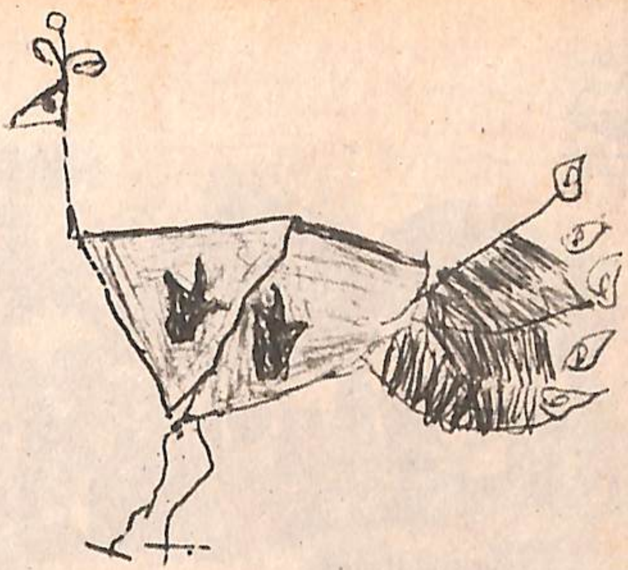
आख़िर उन्हें फाँसी की सज़ा सुनाई गई। 16 नवम्बर, 1915 को उन्नीस साल की उम्र में उन्हें फाँसी दी गई। अपने कई और इंकलाबी साथियों की तरह वे भी 'भारत माता की जय' कहकर फाँसी के तख्ते पर झूल गए। ❑

इस लेख के लिए सामग्री पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा प्रकाशित बांग्ला ग्रंथ 'मुक्तिर संग्रामे भारत'; बलिदान भारती, उज्जैन द्वारा प्रकाशित 'क्रांति कथाएँ' (लेखक श्रीकृष्ण सरल) व राजकमल पेपरबैक्स द्वारा प्रकाशित 'भगतसिंह और उनके साथियों के दस्तावेज़' से ली गई है।

क्रांतिकारियों के चित्रांकन : प्रीति भटनागर।



आशीष कुमार, छठीं, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.



शुभ्रा पंवार, चार वर्ष, सेंधवा, खरगोन, म. प्र.



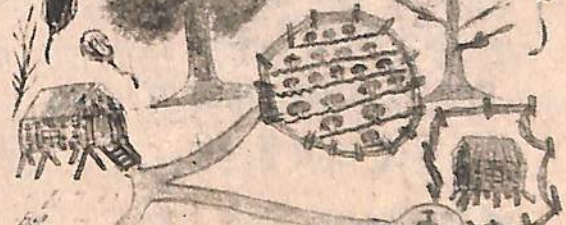
कैलाशचन्द्र बड़ैया, (पता नहीं लिखा)



सुनन्दा, नुंगम्बक्कम, मद्रास, तमिलनाडु



ओमप्रकाश मेघवंशी, मकरेड़ा, अजमेर, राजस्थान



समन पायसिम, पाँचवीं, कुछेप, चांगलांग, अरुणाचल प्रदेश



हेमेन्द्र सिंह कलम, आठवीं, शांतिपुरा

मेरा गाँव

मेरा गाँव है कितना प्यारा
मकान हैं इसमें ग्यारा
पहाड़ हैं इसमें चार
वृक्ष हैं हजार
दूर-दूर तक फैले हैं खेत
नज़र नहीं आती यहाँ रेत
नदियों का है यहाँ अभाव
फिर भी सुन्दर मेरा गाँव
नहरों से होती यहाँ सिंचाई
हरियाली रहती है छाई
जहाँ खेत में फसलें लहरातीं
सब के मुख पर खुशियाँ छा जातीं
तभी होती होली और दिवाली
मेरे गाँव की लीला बहुत निराली

स्मिता श्रीवास्तव, ग्यारह वर्ष,
बालाघाट, म. प्र.

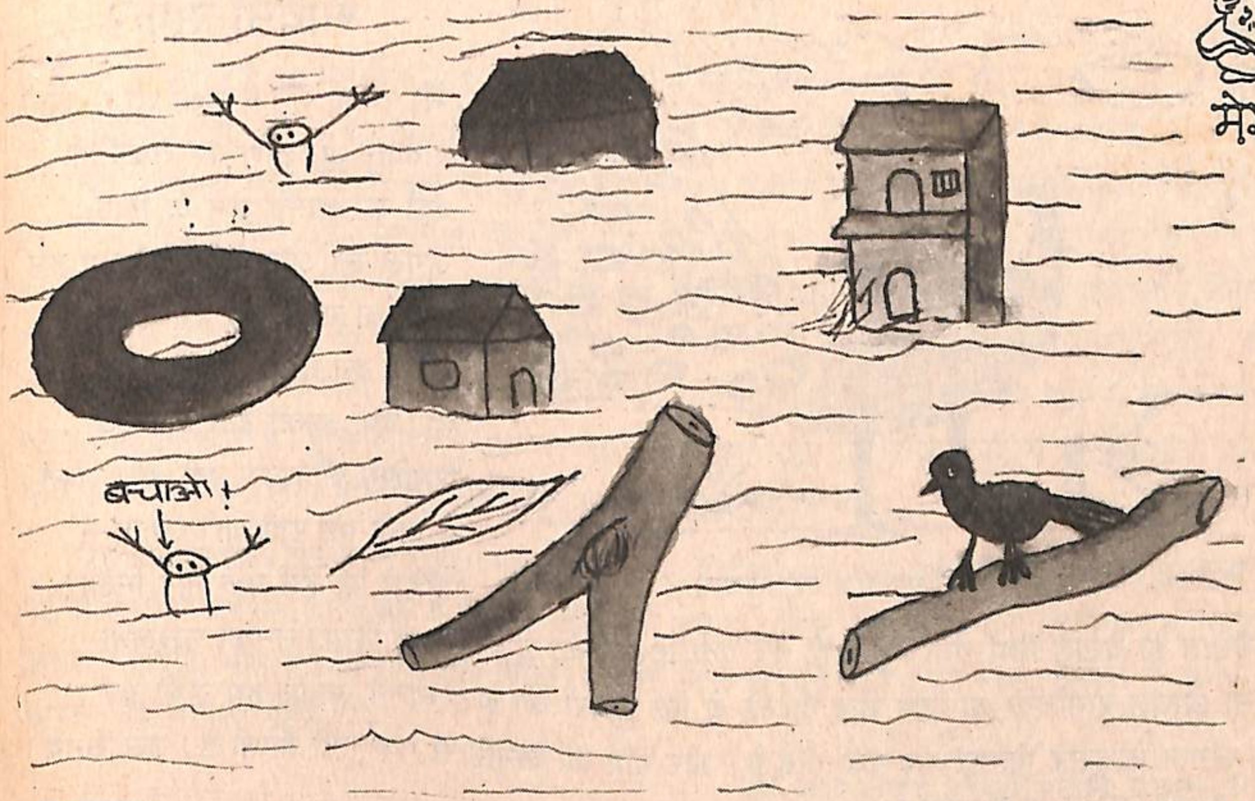
वृक्ष

वृक्ष कहते हैं हमसे
बात करते क्यों दूर से
भूल रहे हैं आप हमें
लेकिन पछताना पड़ेगा तुम्हें
याद करो काम पड़ेगा हमसे
जब पानी बरसेगा नहीं बादल से
कहते हैं आज फिर हम तुमसे
मिलकर कर लो सन्धि हमसे
जबसे हम बिछुड़े तुमसे
मन रहता है बेचैन
तुम्हारी स्वच्छ हवाओं में
सुखी रहते हैं नैन

कमलसिंह पंवार, दसवीं, नांदेड़,
उज्जैन, म. प्र.



सुभाष मुरजी वसावे, तीसरी, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र



निर्मल कुमार गोयल, सालिमपुर अहरा, पटना, बिहार

स्कूल

स्कूल
जिसके नाम से
खुश हो जाता है कोई बच्चा
जैसे हो वह कोई फूल।
स्कूल
जिसके नाम से
डर जाता है कोई बच्चा
जैसे हो वह कोई बड़ी भूल।
स्कूल
जिसके नाम से
खुश होकर भी
दुखी हो जाता है कोई बच्चा
कि उसे नहीं मिलेंगे कॉपी और रूल।
स्कूल
जिसके नाम से
डर जाता है कोई बच्चा
कि उसे पड़ेगी रूल।

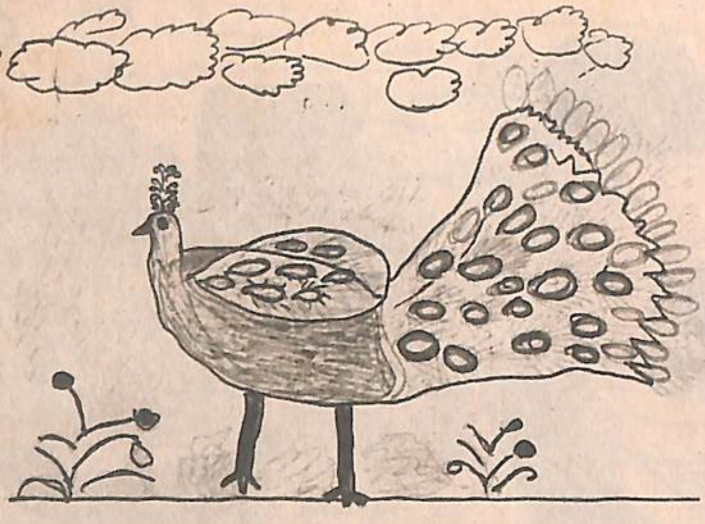
प्योली, सातवीं, वाराणसी, उ. प्र.

नदी आने की सम्भावना

हमारे गाँव में एक बार नदी आने की सम्भावना थी। हमारे गाँव के नदी के किनारे के घर बह गए। नदी के उस पार खेत थे। हमारे गाँव में से उस पार बिजली भेजी गई थी। नदी के पास के चार खम्बे उखड़ गए। सब लोगों को रात में नींद नहीं आई, कहीं नदी न आ जाए। हमारे गाँव की नदी में बर्तन बहकर आ रहे थे। हमारे गाँव के सरपंच ने पूजा करी। और, नदी की फोटो खींची। मेरा दोस्त लोकेन्द्र कह रहा था कि सुबोध कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ। फिर नदी उतर गई। मुझे बहुत मज़ा आया।

सुबोध कुमार साकल्ले, सातवीं,
भादूगाँव, होशंगाबाद, म. प्र.



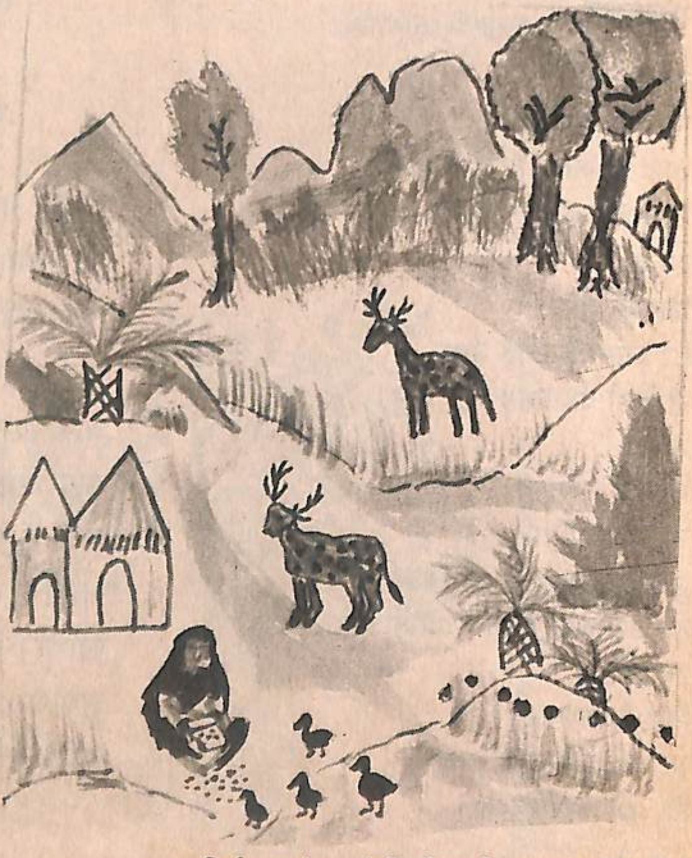


(इस चित्र को भेजने वाले ने अपना नाम पता नहीं लिखा।)

सावनी सफर

मैं, रमेश, चमरू तथा उत्तम चारों रविवार अवकाश पर सुबह ही वर्षा का आनंद लेने के लिए जंगल की ओर रवाना हो गए हम चारों दो साइकलों पर थे। जंगल का दृश्य अत्यंत लुभावना था। वर्षा हल्की हवा के साथ रिमझिम सी बरस रही थी। रास्ते में पानी बह रहा था। जंगल में पहुँचने पर हमें एक मोर मिला। जो देखते ही देखते छिप गया। कुछ ही दूर एक हिरणों का झुंड दिखाई दिया। उनका उछलना कूदना अत्यंत रोमांचक था। हम चल ही रहे थे कि सुअरों का झुंड सामने आया। हम सभी डर गए। जंगल के दूसरे किनारे पर एक गाँव है। और गाँव के किनारे से एक नदी बहती है। उस समय शाम हो गई थी। तथा हम बीस किलोमीटर दूर थे उस गाँव से। नदी के उस पार गाँव में मेरी बहन की ससुराल थी। हम सभी ने वहाँ जाना तय किया। लेकिन नदी में बाढ़ थी। और रमेश नदी में तैरना नहीं जानता था। मैं नदी की थाह लेने घुसा लेकिन गहरी थी। हम उस पार नहीं उतर सकते थे। निराश होकर उसी गाँव में रहना तय किया। क्योंकि घर भी नहीं लौट सकते थे। एक दोस्त के घर रात ठहरे। रात भर वर्षा हुई। सुबह देखा तो नदी और आ गई थी। हम वापस घर की ओर लौट पड़े। वर्षा उसी तरह हो रही थी। हम भीगते हुए घर आ गए। लेकिन सावनी सफर का आनंद आ गया।

बसोरी लाल चौधरी, दसवीं, गणेशपुर, कटनी, जबलपुर, म. प्र.



निर्मला बघेल, नौवीं, निवाली, खरगोन, म. प्र.

मेरी बस यात्रा

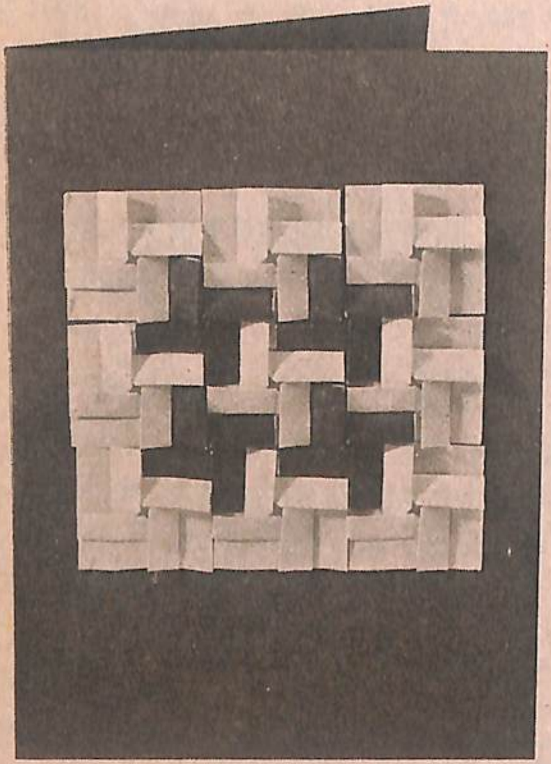
पूर्वी चम्पारण जिलें के मेहसी में बटन बनाने का कारखाना घर-घर में है। बटन बनते हुए मैंने देखा है। वहीं मेरी नानी का गाँव भी है। कुछ दिनों के लिए मैं वहाँ गई थी। मैं अपने पापा जी के साथ नानी जी के घर से आ रही थी। तैयार होकर हम लोग बस स्टैंड गए। वहाँ तुरन्त बस मिल गई। लेकिन आगे यह हुआ कि कुछ दूर जाने के बाद पानापुर में रोड जाम था। कारण यह था कि एक आदमी की बस दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। फिर बहुत पैदल चलने के बाद आगे निकले तो एक बस मुजफ्फरपुर के लिए खड़ी थी। उसी पर बैठ तो गए पर हुआ यूँ कि बस वाले ने कहा यहाँ से मुजफ्फरपुर जाने में सभी आदमियों को दस-दस रुपए किराया लगेगा। जबकि यहाँ से मुजफ्फरपुर सोलह किलोमीटर है। कुछ लोगों ने बस पर से उतरते हुए कहा कि पाँच रुपए में ले चलिएगा तो ले चलिए नहीं तो हम लोग कुछ दूर और चल के ट्रेन से चले जाएँगे।

यह बात सुनकर बस वाले ने फिर से सभी को बस में बैठने को कहा तथा पाँच रुपए में मुजफ्फरपुर पहुँचाया। फिर दरभंगा वाली बस से सिमरी पहुँचे। तो उस बस वाले ने कहा कि इस बच्ची का भी किराया लगेगा। जबकि मेरा बस किराया नहीं लगता था। तो फिर पापा ने उसे रुपए दिए। आराम से हम लोग अपने गाँव बनौली पहुँच गए।

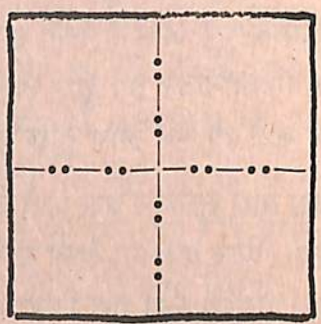
पुष्पम कुमारी, पाँचवीं, बनौली, दरभंगा, बिहार



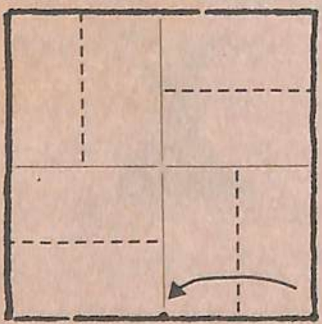
रुकसाना, सातवीं, देवास, म. प्र.



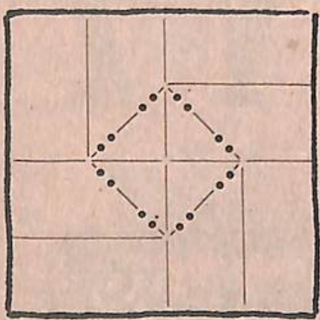
चटाई



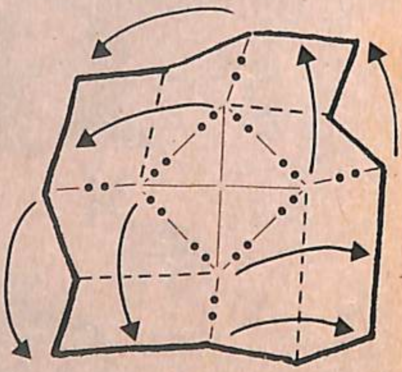
1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ बना लो। मोड़ पक्के करके खोल लो। आकृति को पलट लो।



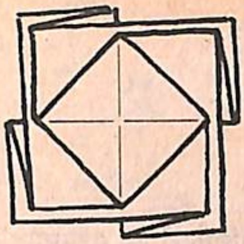
2. अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में मोड़ बनाओ। मोड़ पक्के करके खोल लो और आकृति को पलट लो।



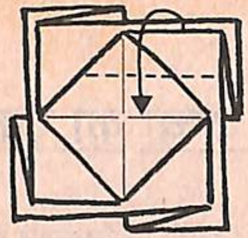
3. अब इस पर दिख रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाओ। मोड़ पक्के करके खोलते जाना।



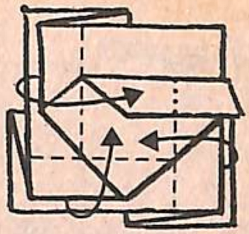
4. अब तुम्हारे पास जो काग़ज़ है उस पर चित्र में दिखाई दे रहे मोड़ के निशान होंगे। अपने काग़ज़ को चित्र में बने मोड़ों के हिसाब से मोड़ो। यह थोड़ा मुश्किल तो है पर कोशिश करो। जहाँ-जहाँ बिन्दु वाली रेखाएँ हैं, वहाँ-वहाँ से मोड़ बाहर की तरफ मोड़ना है। तीर की दिशा में मोड़ बनाते जाओ।



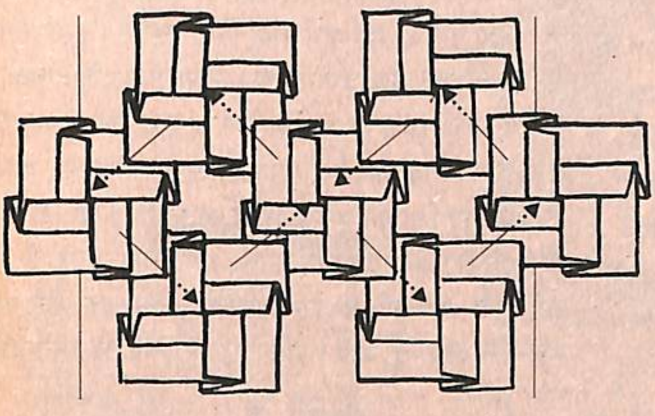
5. इस तरह की आकृति बनेगी।



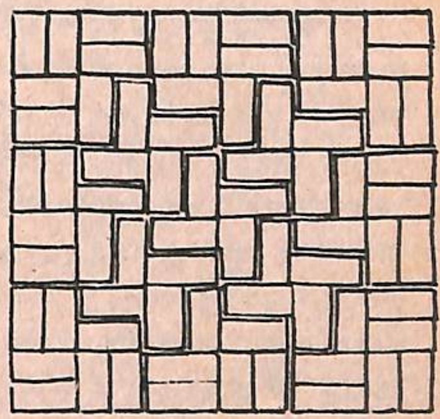
6. इस आकृति में दिख रही टूटी रेखा पर से ऊपरी परत को तीर की दिशा में मोड़ो।



7. इसी तरह मोड़ आकृति के बाक़ी तीन किनारों पर भी बनाओ।



8. यह एक टुकड़ा तैयार हो गया। ऐसे ही कई टुकड़े बना लो। अलग-अलग रंगों या डिज़ाइन के काग़ज़ से यह टुकड़े बनाओगे तो चटाई सुन्दर बनेगी। जो टुकड़े तुमने बनाए, उन्हें जोड़ना है। इस चित्र में दिखाया है कि कैसे एक टुकड़े को दूसरे में फँसाना है।



9. इस चटाई को तुम किसी कार्ड पर चिपकाकर और सुन्दर बना सकते हो। या फिर अपना बस्ता सजा सकते हो।

थाने में बच्चों का एक दिन

पुलिस वाले रिश्वत क्यों लेते हैं? रिश्वत लेकर और नेताओं के दबाव में गुंडों को क्यों छोड़ दिया जाता है? क्या सांप्रदायिक दंगों में जो लोग घर जलाते हैं, मारपीट करते हैं; दंगा ख़त्म होने पर उन पर भी कार्यवाही की जाती है? ये कैसे पहचान लेते हैं कि चोर कौन है? पुलिस के वायरलैस वीरप्पन कैसे सुन लेता है?

ऊपर लिखे हुए तीखे सवाल किसी पत्रकार वार्ता का हिस्सा नहीं, वरन् पुलिस के बारे में अधिक से अधिक जानने की बच्चों की जिज्ञासा का नतीजा थे। ये सवाल एकलव्य हरदा से जुड़े बाल गतिविधि समूह ''चकमक क्लब'' के बच्चों ने थाना प्रभारी अरूण खेमरिया से हरदा थाने में किए। थाना परिसर में बच्चों को पुलिस से रूबरू करवाने से पूर्व ''एकलव्य'' में बाल गतिविधि समूह के स्रोत व्यक्तियों ने उनसे पुलिस के बारे में चर्चा की। बच्चों ने बताया कि उनका कभी पुलिस से काम नहीं पड़ा। पर उन्होंने जो देखा-सुना है उसके कारण उनको पुलिस से डर लगता है। पुलिस बड़ी बेरहम होती है, मारती-पीटती है और हवालात में बन्द कर देती है। हमने कहा, मारपीट तो अपराधियों के साथ की जाती है। हमसे तो शायद वे अच्छा व्यवहार करें। यदि हम अभी थाने चलकर थाना देखें और पुलिस से बात करें तो कैसा रहेगा? थाने चलने के प्रस्ताव पर बच्चे थोड़ी सी हिचकिचाहट के बाद सहर्ष तैयार हो गए।

थाना परिसर में थाना प्रभारी अरूण खेमरिया ने बच्चों से बातचीत की। उन्होंने कहा कि यह एक कड़वा सच है कि लोगों की नज़र में पुलिस वाले भले आदमी नहीं होते। पर इसके लिए खुद पुलिस वाले ही अधिक ज़िम्मेदार हैं। वे अपने अधिकारों का दुरुपयोग करते हैं। खुद के लिए अधिक से अधिक सामान जुटाने के लिए रिश्वत लेते हैं। कई बार प्रभावशाली लोगों के दबाव में भी गलत काम करते हैं। पुलिस वाले बेरहम होते हैं, यह छवि पुलिस की उम्र जितनी पुरानी है। अंग्रेज़ों के समय में पुलिस का उपयोग लोगों को दबाकर रखने और यातना देने के लिए किया जाता था। उस समय से पुलिस की जो क्रूर छवि बनी है, वह अभी तक मिटी नहीं है। दूसरे हमारे यहाँ के स्कूली पाठ्यक्रमों में भी पुलिस सेवा की जानकारी नहीं दी जाती। देश के आज़ाद होने के बाद पुलिस प्रशासन में कई बदलाव किए गए। पुलिस से वे अधिकार वापस ले लिए गए जिनका दुरुपयोग वे आम लोगों के खिलाफ कर रहे थे। अब पुलिस लगातार बदलती जा रही है। हो सकता है, अगले पाँच-दस सालों में पुलिस का ऐसा रूप देखने में आए कि आप उसे लोगों की मित्र और सहयोगी मान सकें।

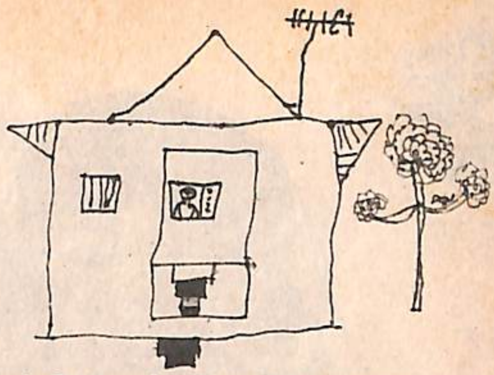
बच्चों ने थाने का अवलोकन भी किया। हवालात, मालघर, हथियार कक्ष और विभिन्न अपराधों के चार्ट देखे। वायरलेस पर बात करने का तरीका सीखा। हथियार कक्ष में बच्चों ने रिवाल्वर, बन्दूक और कारतूस हाथ में लेकर देखना चाहा। कार्यक्रम में चकमक क्लब टिमरनी के बारह और हरदा के पाँच बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान मारपीट की रपट लिखवाने आए आठवीं कक्षा के एक बच्चे को भी कार्यक्रम में शामिल कर लिया गया। इस अवसर पर बच्चों के लिए स्वल्पाहार की व्यवस्था भी पुलिस द्वारा की गई।

रपट : चंदन यादव

अगर तुम्हारा भी ऐसा कोई अनुभव हो तो हमें लिख भेजो। थाना, रेल्वे स्टेशन, बैंक, नगर पालिका, पंचायत, पोस्ट ऑफ़िस, अस्पताल या ऐसी ही अन्य संस्थाएँ जो नागरिकों के लिए बनी हैं, वास्तव में कैसे काम करती हैं, कर रही हैं? पता करो। अपनी नज़र से देखो और समझो फिर हमें भेजो, हम कोशिश करेंगे कि चकमक के ज़रिए उसे और लोग भी जान सकें।



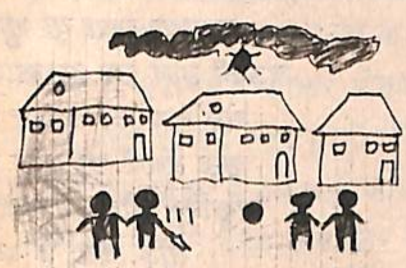
नंदकिशोर सेन, आठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.



अबरार कुरैशी, भादूगाँव, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.



वर्षा शर्मा, चौथी, चुक्तिपानी, बिलासपुर, म. प्र.



भाश्वर, साढ़े पाँच वर्ष, जयपुर, राजस्थान



शशांक खत्री, दूसरी, इन्दौर, म. प्र.



अपूर्वा सिन्हा, कच्चीघाट, पटना, बिहार



सुनीता फिलोमिना, आठ वर्ष, भोपाल, म. प्र.



अलका डडसेना, आठवीं, सक्ती, बिलासपुर, म. प्र.

सपना

मेरे मन के कोने में
एक दिन देखा मैंने
चमकता हुआ एक बीज
हाँ! हाँ! आशा का एक बीज
कुछ ही दिनों में फिर मैंने
देखा उसे होते अंकुरित
चमक उठा जिससे चेहरा
खिल गई मैं हर्ष उल्लास से
लगे नहीं थे उसमें अभी
खुशी के कोई सुन्दर फूल
अचानक एक दिन आया
एक अनोखा तूफान
वह थी कोई आँधी
या फिर था कोई तूफान
कराया गया था मुझे
लड़की होने का अहसास
मेरे मन की आशा ने
कुछ बनने की चाह ने
अंकुरित होने से पहले
तोड़ दिया है दम
शायद समय बदल जाए
नई आशा की किरण मिले
यही छोटा-सा सपना
लिए बैठी मैं मन में आज

अनीता अग्रवाल, गंगटोक, सिक्किम

बगुला भगत

एक पोखर में थे दो मेंढक
छन्नु-बन्नु नाम
पढ़ाई-लिखाई तो करते नहीं
बस टर्राना है काम
उसी पोखर में था
एक बगुला
हरिसेवक था नाम
हरि भजन में लगे रहे
वो रोज सुबह-शाम

एक बार हरि सेवक जी
पूजा में रहे मस्त
उधर छन्नु-बन्नु जी
टर्राने में रहे व्यस्त
हरिसेवक की पूजा में
मेंढक देने लगे दखल
हरिसेवक ने दोनों को
एक साथ लिया निगल

कमलेश्वर डहरे, नौवीं, सोनापुटी, रायपुर, म. प्र.

दो दोस्त और बिच्छू



सुखदेव प्रसाद गुर्जर, सातवीं, सरसड़ी, अजमेर, राज.

एक दिन मैं अपने खेत पर जाने का सोच रहा था कि इतने में मेरा मित्र आकर बोला कि खेत पर चलते हैं, वहाँ खेलेंगे और भुट्टे सेंककर खाएँगे, और वहाँ पर झूला है हम वहाँ जाकर झूलने का भी मज़ा लेंगे। मैंने कहा चल फिर मैंने सोचा कि इसका खेत 2 किलोमीटर है वहाँ जाएँगे आएँगे तो पैर दुखने लगेंगे। मैंने मेरे मित्र से कहा कि तेरी साइकल ले ले, हम जल्दी पहुँच जाएँगे। और पैर भी नहीं दुखेंगे। मेरे मित्र ने उत्तर दिया कि मेरी साइकल पंचर है। मैंने सोचा था कि जल्दी पहुँच जाएँगे लेकिन आखिर पैदल ही जाना पड़ा।

उसके कुएँ पर पहुँचकर हम दोनों छिपमछेली खेले, खेलते-खेलते आधा घण्टा बीत गया। और, फिर वह बोला कि दो बजे घर से निकले थे और 5 बजे घर वापस जाना है। मैंने कारण पूछा कि क्या काम है? वह बोला कि मम्मी ने जल्दी ही बुलाया था। हमें खेलते-खेलते बहुत देर हो गई। अब हमें जाकर भुट्टे तोड़ना चाहिए। हम भुट्टे तोड़ने लगे। वहाँ पर हमने लम्बा और मोटा साँप देखा। वह साँप फन निकालकर बैठा रहा और कुछ समय बाद वह सामने लम्बी झाड़ियों में चला गया। वहाँ से हमने जल्दी से भुट्टे तोड़कर रख दिए फिर मेरा मित्र लकड़ी बीन लाया। और हमने भुट्टे सेंककर खा लिए। फिर मैंने कहा कि चल चलकर झूलते हैं। झूलते-झूलते हमें चक्कर आने लगे। मेरे मित्र के खेत के पास से एक आदमी गुज़र रहा था। हमने उससे टाइम पूछा, उसने कहा कि साढ़े चार बज रहे हैं। मैंने कहा कि अब हमको घर चलना चाहिए। और हम वहाँ से निकल पड़े।

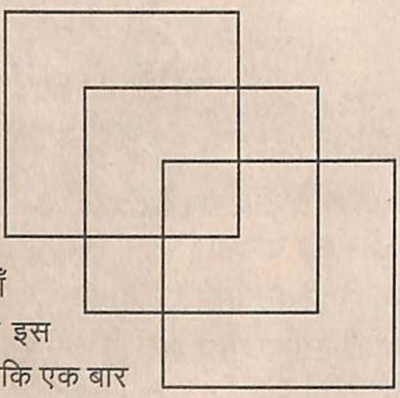
चलते-चलते एक इमली के वृक्ष के नीचे से हम इमली लेने लग गए। मेरे मित्र के पास एक थैली थी हमने इमली उसके अन्दर भर ली। उसे पत्थर के नीचे दो-तीन इमली दिखी। वह इमली लेने गया तो पत्थर के नीचे बिच्छू था। बिच्छू ने मेरे दोस्त को डंक मार दिया। उसी राह पर से दो सज्जन गुजर रहे थे, उन्होंने देखा कि उस बच्चे को बिच्छू ने काटा है। वह सज्जन मेरे मित्र को गाँव ले आए। और, पाँच बजे घर जाने के बजाय हमें सात बज गए।

कमलसिंह चौहान, आठवीं, नामली, महू, म. प्र.



माथापच्ची

(1)



फिर वही बगैर पेंसिल उठाए, बगैर लाइन काटे बनाई जाने वाली आकृति की पहेली। क्या तुम यहाँ दी हुई आकृति को इस तरह बना सकते हो कि एक बार बनाना शुरू करो तो बगैर पेंसिल उठाए पूरी कर लो, और बीच में कोई लाइन भी न काटो?

(2)

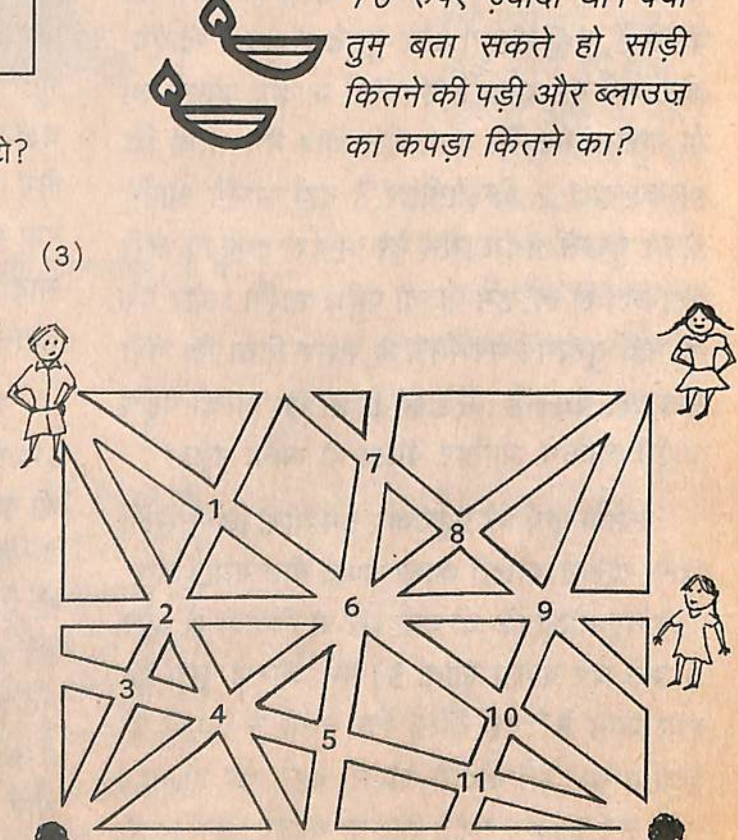


***दीपावली** की तैयारी में मैंने अपने लिए एक साड़ी और एक ब्लाउज़ का कपड़ा खरीदा। दोनों की कुल कीमत 130 रुपए थी। साड़ी की कीमत ब्लाउज़ के कपड़े से 70 रुपए ज़्यादा थी। क्या तुम बता सकते हो साड़ी कितने की पड़ी और ब्लाउज़ का कपड़ा कितने का?*

(3)

गोलू के मोहल्ले में चोर-सिपाही का खेल उलटा खेला जाता है। चोर एक ही होता है और सिपाही ढेर सारे। चोर को छिपने के लिए पूरे मोहल्ले की गलियों में कहीं-भी जाने की छूट होती है। लेकिन सिपाहियों को मोहल्ले के बाहर से ही, गलियों में अन्दर जाए बिना चोर को ढूँढना होता है। हाँ, वे गलियों में ताक-झाँक कर सकते हैं।

यहाँ गोलू के मोहल्ले की गलियों का नक्शा बना है। गोलू महाशय चोर बने इन्हीं गलियों में कहीं छिपे हैं। और तो और वे एक ऐसी जगह पर खड़े हैं, जहाँ दो गलियाँ एक-दूसरे को काटती हैं। फिर भी सिपाही बने पाँचों दोस्त उसे देख नहीं पा रहे हैं। नक्शे को देखकर बताओ कि गोलू कौन-से नम्बर के चौराहे पर छुपा है।



(4)

13	6	19	13	10	14	24	52	7	5
24	21	3	2	6	5	1	8	44	31
31	8	4	3	8	4	11	6	36	8
18	9	12	8	2	3	4	9	34	5
17	32	24	43	13		20	7	26	1
5	47	16	7	28	8	4	12	9	24
2	19	2	28	9	10	7	13	32	19
42	46	31	4	6	22	5	55	13	21
36	7	40	23	9	14	31	8	11	14
11	3	18	34	65	21	7	15	33	6



यहाँ बीच में फँसा हाथी संख्याओं के जंगल में खो गया है। सम संख्याओं की मदद से बाहर निकलने के तो कई रास्ते हैं। उनमें से एक यहाँ दिया भी हुआ है। पर हाथी साहब को तलाश है एक ऐसे रास्ते की जो सिर्फ विषम संख्याओं को जोड़कर बना हो। रास्ता ढूँढने के लिए तुम दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे, आड़े-तिरछे कैसे भी जा सकते हो।

(5)

***मान** लो किसी ने तुमसे कहा कि चकमक में से पेज 7, 8, 12, 13 और 26 फाड़ने हैं। सचमुच में फाड़ने मत लग जाना, सिर्फ मान लो कि फाड़ना है। तो कितने पन्ने फाड़ने पड़ेंगे? बगैर चकमक पलटे बताने की कोशिश करो। न बने तो पलटकर देख भी सकते हो।*

(6)

यहाँ 4 समीकरण दिए हैं पर सारे अंक गलत-सलत जमे हैं। तुम्हें इन्हीं (1 से 9 तक) अंकों को ऐसे जमाना है कि चारों समीकरण सही हो जाएँ।

$$
\begin{array}{r}
1 - 2 = 3 \\
\times \\
4 \div 5 = 6 \\
= \\
7 + 8 = 9
\end{array}
$$

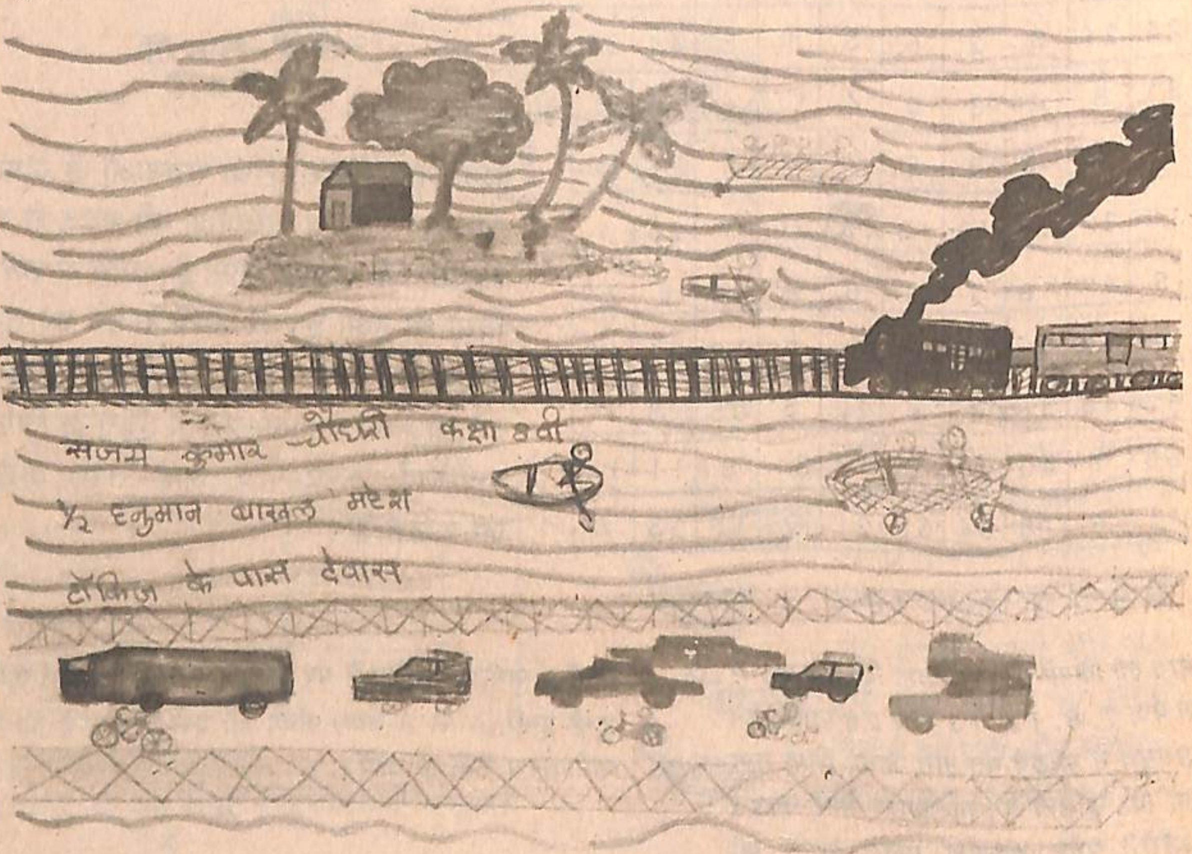
(7)

सरोज के स्कूल में विज्ञान के प्रयोग की तैयारी हो रही थी। अगले दिन दूषित हवा की जाँच करनी थी। टीचर ने सरोज को एक बन्द शीशी दी जिसका ढक्कन खुल तो जाता था पर ठीक से लगाने पर सीलबन्द हो जाता था। सरोज चूँकि कारखानों से लगी बस्ती में रहती थी इसलिए अगले दिन के प्रयोग के लिए उसे अपने घर के पास के कारखानों के धुएँ से प्रदूषित हवा शीशी में भरकर लानी थी।

शाम को शीशी सम्हाले घर लौटते हुए सरोज इस सोच में पड़ गई कि खाली शीशी में तो स्कूल के पास की हवा भरी थी। अब वह यह कैसे पक्का करे कि कल जो हवा शीशी में भरकर स्कूल ले जाए वह स्कूल वाली और घर वाली का मिलावट न हो? शीशी में अभी मौजूद हवा को निकालकर घर के आसपास वाली हवा कैसे भरी जाए? क्या तुम कुछ सुझा सकते हो?



हमारी सैर



संजय कुमार चौधरी, आठवीं, देवास, म. प्र.

मेरे पापा ने छुट्टियों में जयपुर जाने का प्रोग्राम बनाया। हम दोपहर वाली रेल से जयपुर के लिए रवाना हुए। जब गाड़ी जयपुर के लिए जा रही थी। बीच में एक पुल आया। जब गाड़ी पुल को पार कर रही थी तो हमें बड़ा मज़ा आया। जब जयपुर आया तो हम बहुत खुश हुए। हमने जयपुर में जल महल, चिड़ियाघर अजायबघर और बिड़ला मन्दिर देखा तो हमें बहुत अच्छा लगा। हम जयपुर से आगरा गए। आगरा में हमने ताजमहल, लालकिला, मीनाबाजार देखा। हमने मीनाबाजार में एक छोटा-सा ताजमहल देखा। वह सजावट के लिए था। वह वैसा ही था। उसको बनाने में साढ़े चार वर्ष लगे और सात लाख रुपए लगे। वह छोटा-सा था मगर अच्छा था। फिर हम आगरा से जयपुर गए।

स्वीटी, छतरगढ़, बीकानेर, राजस्थान



कैसे लिखते हैं कविता

मार्च, 96 के अंक में डॉ. श्री प्रसाद का एक लेख 'कैसे लिखते हैं कविता' छपा था। और एक चित्र भी दिया था, कविता लिखने के लिए। जो कविताएँ हमें मिलीं उनमें से चार यहाँ दे रहे हैं, तुम भी पढ़ो।

चिड़िया रानी आओ

चिड़िया रानी आओ
मुझसे न भय खाओ
आकर अपना वही पुराना
चूँ-चूँ वाला सुन्दर गाना
गाकर मुझे सुनाओ
चिड़िया रानी आओ
मीठे-मीठे बोल बोलकर
मेरा मन बहलाओ
चिड़िया रानी आओ

धुनेश्वर शोरी, सातवीं, छोटेडोंगर, बस्तर, म. प्र.

प्यारी चिड़िया

प्यारी-प्यारी न्यारी चिड़िया
रोज मेरे घर के आँगन में
आकर बैठ जाती चिड़िया
सूर्य निकल आने से पहले
मुझको रोज जगाती चिड़िया
मीठी बोली बोलकर
मेरा मन बहलाती चिड़िया
मुझको बहुत ही भाती चिड़िया

उमेश कुमार समरथ, सातवीं, छोटेडोंगर, बस्तर, म. प्र.



चिड़िया रानी

चिड़िया रानी बड़ी सयानी
सबको लगती बहुत ही प्यारी
चीं-चीं कर जब है चहकती
दुनिया लगती बहुत ही न्यारी
ऊँचे गगन में उड़ने वाली
फूलों पेड़ों पर रहने वाली
बच्चों का मन बहलाने वाली
मुझको लगती हमेशा ही प्यारी

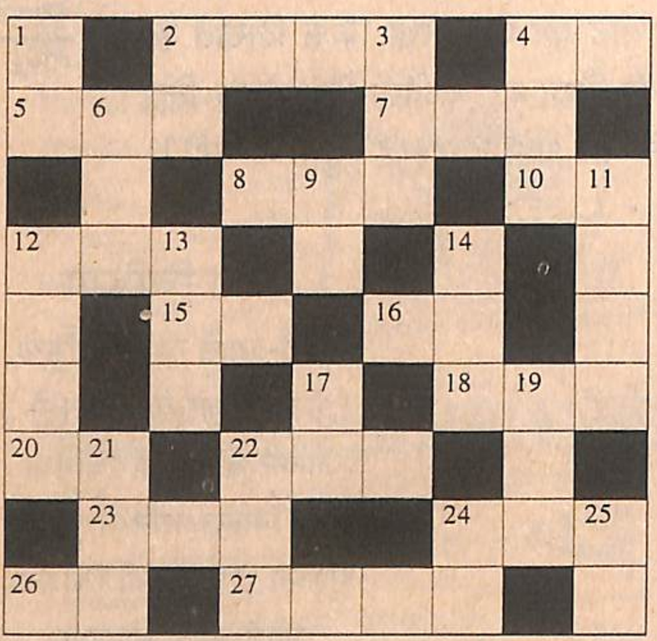
टीकेश्वर साहू, दसवीं, सरागाँव, रायपुर, म. प्र.

चिड़िया गीत सुनाती

रोज आँगन में चिड़िया
अपना गीत सुनाती
चीं चीं चीं चीं चूं चूं करके
सुबह सबको जगाती
मिल जाए खाने को कुछ
झटपट सब चुग जाती
जो धूप तेज आ जाए
फुर्र से उड़ जाती

आशीष महाजन, खरगोन, म. प्र.

वर्ग पहेली – 77



संकेत : बाएँ से दाएँ

2. जो कुछ भी आसानी से प्रवाहित न होने दे (4)
4. एक चिड़िया जो अपने घोंसले की बनावट के लिए मशहूर है (2)
5. अगर लहर चले, तो ज़हर भी मिलेगा (3)
7. केतन हामिदपुर में, अकेला है (3)
8. मदद (3)
10. सावधानी में काट-छाँट से पाओ घी, मक्खन से मिलने वाला पोषक तत्व (2)
12. अनुभव न हो, तो घर कैसे बनेगा? (3)
15. दही या मही से बनने वाला स्वादिष्ट व्यंजन (2)
16. हातिम की काट-छाँट में है विशाल (2)
18. एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय वैज्ञानिक का नाम (3)
20. एक पेड़ जिसकी छाल दवा के काम आती है (2)
22. मुर्गे के सिर पर .... (3)
23. हट्टा-कट्टा (3)
24. बहुत बड़ा या महान (3)
26. .... है तो जहान है (2)
27. अधिकारी गर चाहे तो दस्तकार बन सकता है (4)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. अजगर में समाई है दुनिया (2)
2. गोत्र भी और महायोग भी (2)
3. अचानक तराना में ढूँढो बूँद या अंश (3)
4. प्रवाह (3)
6. कोई तरल पदार्थ निकलकर बहना (3)
9. किसी बात पर स्वीकृति ज़ाहिर करना या हाँ में हाँ मिलाना, ... भरना (2)
11. '' विश्राम '' के बाद दिया जाने वाला आदेश (4)
12. डरा हुआ (4)
13. बेजान कली, असली नहीं (3)
14. आहा रबी की फसल से तो भोजन मिलेगा (3)
17. हवा के बहाव से चलने वाली नावों में लगने वाला कपड़ा (2)
19. बीमारी (3)
21. कोशिश भी और सावधानी भी (3)
22. बहुत ज़ोरों से (3)
24. खान से निकला हुआ शुद्ध लोहा या बिच्छू आदि का डंक (2)
25. सबसे तेज़ गर्मी वाला महीना (2)

यह वर्ग पहेली बसंत तिवारी, भोपाल द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित है।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का वह अंक उपहार में भेजा जाएगा जिसमें इस पहेली का हल छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें बल्कि शब्दों को नम्बर डालकर लिख दें।

वर्ग पहेली – 77 का हल फरवरी , 1998 के अंक में देखें।

क़िस्सा - बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा। जूज़ेप नाम के बढ़ई को एक बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा – बुरातीनो।

अपनी शरारतों के कारण बुरातीनो बिल्ले और लोमड़ी के चंगुल में फँस गया। फिर पुलिस के कुत्ते बुरातीनो को नगर के बाहर गन्दे तालाब में फेंक आए। तालाब के कूबर कछुए ने उसे बचाया और उसे सोने की चाबी दी। सोने की यह चाबी काराबास बाराबास भी पाना चाहता था। इसी चक्कर में बुरातीनो और काराबास बाराबास के बीच घमासान लड़ाई हुई। इस लड़ाई में काराबास बाराबास बुरी तरह घायल हो गया।

बुरातीनो अपने साथियों के साथ एक गुफा में जाकर आराम करने लगा। थोड़ी देर बाद वहाँ से काराबास बाराबास और जोंकमार गुज़रे। उन्हें भूख लग रही थी सो वे एक ढाबे की तरफ जा रहे थे। बुरातीनो भी उनके पीछे चल दिया। वह उनसे पहले ढाबे में पहुँचकर पानी के एक घड़े में छिपकर बैठ गया।

काराबास बाराबास अपने साथियों के साथ ढाबे में पहुँचा और डींग हाँकने लगा। थोड़ी देर बाद बुरातीनो घड़े में से काराबास बाराबास को ललकारने लगा। बुरातीनो की आवाज़ सुनकर तीनों घबरा उठे। तभी वहाँ लोमड़ी और बिल्ला आ पहुँचे। उन्होंने बताया कि बुरातीनो घड़े में छिपा है। काराबास बाराबास ने घड़ा उठाकर फ़र्श पर पटक दिया।

घड़े के फूटते ही बुरातीनो मुर्गे की मदद से वहाँ से भाग निकला। काराबास बाराबास अपने साथियों के साथ फिर बुरातीनो को खोजने निकल पड़ा। जल्द ही उसने बुरातीनो तथा उसके साथियों को ढूँढ निकाला। लेकिन काराबास बाराबास उन्हें पकड़ पाता उससे पहले पापा कार्लो वहाँ आ पहुँचे। अब आगे पढ़ो...

बुरातीनो घर लौटा

पापा कार्लो के सोटे और क्रोध से तमतमाये चेहरे को देखकर सभी बदमाश थरथर काँपने लगे।

लोमड़ी अलीसा धीरे से घनी घास में दुबक गई और वहाँ से तुरन्त रफूचक्कर हो गई। बिल्ला बज़ीलिओ जूते की ठोकर से दस कदम दूर जा गिरा।

जोंकमार अपने हरे ओवरकोट को सम्भालते हुए तेज़ी से नीचे की ओर भागा, वह बार-बार यही बोलता जा रहा था, "मैंने कुछ नहीं किया, मैंने कुछ नहीं किया....."

काराबास बाराबास वहीं का वहीं बुत बना खड़ा रहा। उसकी लम्बी दाढ़ी गीले चिथड़े की तरह झूल रही थी।

बुरातीनो, पियेरो और मलवीना चट्टान के ऊपर चढ़ गए। पापा कार्लो एक-एक को सम्भालता, हाथ में उठाता और उंगली से धमकाकर यह कहता, "ठहर, शैतान, ठहर!"

और उन्हें अपनी कमर में खोंस लेता था।

इसके बाद वह ढलान पर कुछ क़दम नीचे उतरा और दुखी आर्तेमोन के पास बैठकर उसे देखने लगा। बुरातीनो इसी क्षण कमरबन्द से झाँकता हुआ बोला, "पापा कार्लो, हम कुत्ते के बिना घर नहीं जाएँगे।"

कार्लो ने कहा, "यह तो भारी पड़ेगा। ख़ैर, तुम्हारे कुत्ते को भी किसी तरह लाद लूँगा।"

उसने आर्तेमोन को कन्धे पर उठाया और बोझ से हाँफते हुए ऊपर चढ़ने लगा। जहाँ काराबास बाराबास पहले की तरह अभी भी कंधों के बीच गर्दन धँसाए आँखें तरेर रहा था, "कठपुतले मेरे हैं..." वह बड़बड़ाया।

पापा कार्लो ने उसे डाँटते हुए कहा, "अरे, तू!

बुढ़ापे में चोर-उचक्कों से दोस्ती कर बैठा। लोमड़ी और बिल्ले के खोटे कारनामों को कौन नहीं जानता? और ऊपर से जोंकमार तुम्हारा दोस्त बन गया। तुम लोग मिलकर नन्हे-मुन्नों को सताते हो! तुम्हें शर्म आनी चाहिए, डाक्टर!"

और फिर कार्लो शहर की ओर चल पड़ा।

काराबास बाराबास अपनी गर्दन सिकोड़े पीछे-पीछे चलने लगा, "कठपुतले मेरे हैं, मुझे वापस कर दो!"

"बिलकुल मत देना!" बुरातीनो ने कमरबन्द से उचकते हुए चिल्लाकर कहा।

कार्लो एक पहाड़ी टीले पर चढ़ा जहाँ से समुद्र दिख रहा था।

काराबास बाराबास कार्लो से तीन क़दम पीछे खड़ा होकर बड़बड़ा रहा था, "मैं तुम्हें इन पुतलों के बदले में सोने के सौ सिक्के दूँगा। बेच दो इन्हें।"

बुरातीनो, मलवीना और पियेरो की तो साँस ही रुक गई - आख़िर कार्लो क्या जवाब देता है।

उसने कहा, "नहीं! यदि तुम थियेटर के दयालु और भले मालिक होते, तो मैं तुम्हें इन नन्हे-मुन्नों को यूँ ही सौंप देता। लेकिन तुम तो घड़ियाल से भी गए गुज़रे हो। तुम्हें न तो इन्हें दूँगा, न बेचूँगा, भाग जाओ यहाँ से।"

कार्लो टीले के उस पार नीचे उतरा और काराबास बाराबास पर फिर कोई ध्यान दिए बिना शहर में पहुँच गया। वहाँ सुनसान चौराहे पर एक पुलिसवाला बुत की तरह खड़ा था।

अचानक काराबास बाराबास ने अपनी दाढ़ी जेब में घुसेड़ ली, उसने पीछे से कार्लो की कमीज़ पकड़ ली और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, "चोर, चोर, पकड़ो, पकड़ो! यह मेरे कठपुतले चुराकर भाग रहा है!"

लेकिन पुलिसवाला, जो गर्मी और उमस से परेशान खड़ा था, अपनी जगह से हिला भी नहीं। काराबास बाराबास लपककर उसके पास गया और उससे कार्लो को गिरफ़्तार करने के लिए कहा।

"तू कौन है!" पुलिसवाले ने अलसाए स्वर में पूछा।

"मैं कठपुतली विज्ञान का डाक्टर हूँ, विख्यात कठपुतली थियेटर का निदेशक। मुझे बड़े-बड़े ख़िताब मिले हैं। मैं ताबड़तोड़ राजा का निकटतम मित्र, सिनियोर काराबास बाराबास हूँ..."

"चिल्लाओ मत यहाँ," पुलिसवाले ने कहा।

जब तक काराबास बाराबास पुलिसवाले से बहस करता रहा, पापा कार्लो पथरीली सड़क पर लाठी खटखटाता हुआ जल्दी से घर पहुँच गया। उसने सीढ़ी के नीचे वाली अन्धेरी कोठरी का दरवाज़ा खोला, आर्तेमोन को कन्धे से उतारकर खाट पर लिटाया, कमरबन्द से बुरातीनो, मलवीना और पियेरो को निकालकर मेज़ पर पास-पास बैठाया।

उसने बड़े प्यार से आर्तेमोन की पट्टियाँ खोलीं। घाव भर चुके थे। आर्तेमोन हिल-डुल नहीं सकता था, क्योंकि भूख से बेहाल था।



"काश, एक प्लेट जई का दलिया और मज़ेदार हड्डी मिल जाती," आर्तेमोन ने कराहते हुए कहा, "फिर तो मैं शहर भर के कुत्तों से लड़ लेता।"

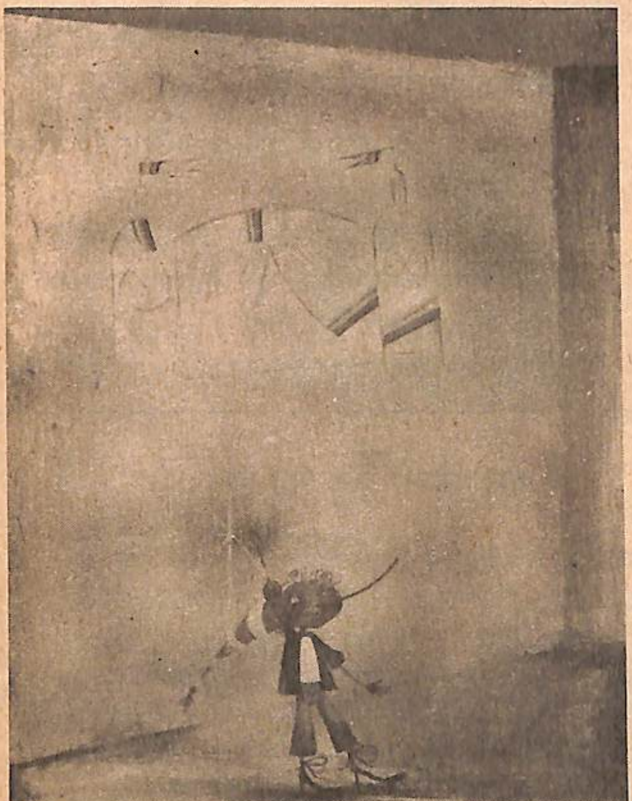
मलवीना दुखी होकर सिसकने लगी। पियेरो सोच में पड़ा माथे पर मुट्ठियाँ रगड़ने लगा, "मैं अभी सड़क पर अपनी कविताएँ सुनाऊँगा, राहगीरों से ढेर सारे पैसे इकट्ठे हो जाएँगे।"

"तो फिर बेटे, तुम आवारागर्दी के अपराध में हवालात की हवा खाओगे।"

बुरातीनो को छोड़कर सभी उदास हो गए। वह चालाकी से मुस्करा रहा था और इस तरह से उछल-कूद मचा रहा था जैसे वह मेज़ पर नहीं, सुई की नोक पर बैठा हो।

"भाइयो, बहुत हो चुका, अब रोना-धोना बन्द करो!" उसने फ़र्श पर कूदकर जेब से कोई चीज़ निकाली।

"पापा कार्लो, आप ज़रा हथौड़ी लेकर दीवार से यह फटा-पुराना कैनवास उखाड़ दें।"



और उसने अपनी नुकीली लम्बी नाक तानकर अलावघर और उस पर चढ़े बर्तन तथा धुएँ को दिखलाया, जो पुराने कैनवास पर चित्रित थे।

कार्लो को आश्चर्य हुआ, "बेटा, तुम दीवार से इतने प्यारे चित्र को उखाड़ने के लिए क्यों कह रहे हो? जाड़ों में मैं जब उसे देखता हूँ, तो बस कल्पना करने लगता हूँ कि यह असली आग है, देगची में मसालेदार गोश्त उबल रहा है, फिर तो मुझे ख़ुद-ब-ख़ुद गर्माहट आने लगती है।"

"पापा कार्लो, मैं अपने इस कठपुतले जीवन की कसम खाकर कहता हूँ – अपने चूल्हे में अब असली आग होगी, सचमुच की देगची होगी और उसमें गर्म-गर्म खाना पक रहा होगा। बस, कैनवास उखाड़ो!"

बुरातीनो ने यह सब इतने विश्वास से कहा कि पापा कार्लो ने माथा खुजलाया, थोड़ा हिचकिचाकर संड़सी तथा हथौड़ी उठा ली और कैनवास उखाड़ने में जुट गया। इसके पीछे, जैसा कि हम जानते हैं, सब कुछ मकड़ी के जालों से ढका हुआ था, जिसमें मरी हुई मकड़ियाँ लटक रही थीं।

कार्लो ने जाले साफ़ किए। तब दीवार पर एक नन्हा सा काला-काला दरवाज़ा नज़र आने लगा। उसके चारों कोनों पर हँसते-खिलखिलाते चेहरे बने हुए थे और बीच में नाचते-थिरकते एक लम्बी नाकवाले नन्हे लड़के का चित्र बना था।



जब उस पर से धूल झाड़ी गई तो मलवीना, पियेरो, पापा कार्लो और यहाँ तक कि भूख का मारा हुआ आर्तेमोन भी चीख पड़ा, "अरे, यह तो बुरातीनो का चित्र है!"

"मुझे पता था यही होगा," बुरातीनो ने कहा, हालाँकि उसे कुछ भी पता नहीं था, उसे खुद आश्चर्य हो रहा था। "और यह रही इस ताले की चाबी। पापा कार्लो, आप इसे खोल दें।..."

"यह दरवाज़ा और यह सोने की चाबी," कार्लो ने कहा, "बहुत पुराने ज़माने में किसी होशियार कारीगर के बनाए हुए हैं। आओ, देखते हैं दरवाज़े के पीछे छिपा क्या है।"

उसने ताली में चाबी लगाई और उसे घुमाया.... वहाँ हल्का-हल्का मधुर संगीत गूँजने लगा। ठीक उसी तरह जैसे कोई जादू की डिबिया खोल रहा हो...

पापा कार्लो ने दरवाज़े को धकेला, वह चरमराता हुआ खुलने लगा। ठीक इसी समय बाहर कुछ लोगों के दौड़ने की आहट हुई और काराबास बाराबास की दहाड़ती हुई आवाज़ सुनाई दी, "ताबड़तोड़ राजा के नाम पर बदमाश कार्लो को गिरफ़्तार कर लो।"

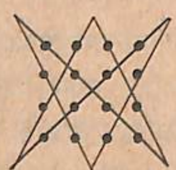
(अगले अंक में जारी)

'सोने की चाबी - क़िस्सा बुरातीनो का' से साभार।
लेखक : अलेक्सई तोलस्तोय। सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोश्किन।

माथापच्ची के हल : अक्टूबर, 1997 अंक के

2. इन अंकों को बारह अलग-अलग तरह से जमाया जा सकता है। छह तरह से तो इन्हीं तीन अंकों से। छह और जमावटें 6 को पलटकर 9 बनाने से बन सकती है।

3.



4. क्रम है :

7 गोले, 9 त्रिभुज, 6 वर्ग, 8 गोले, 5 त्रिभुज, 7 वर्ग, 4 गोले, 6 त्रिभुज और 3 वर्ग।

यानी प्रश्नचिन्ह वाली जगहों पर पहले 7 वर्ग और फिर 6 त्रिभुज आएँगे।

5. हीरालाल की स्कूल आने और जाने की चाल की औसत रफ्तार 50 मीटर प्रति मिनट है।

6. एक (1) $1000+1=1001$

$1000 \times 1=1000$

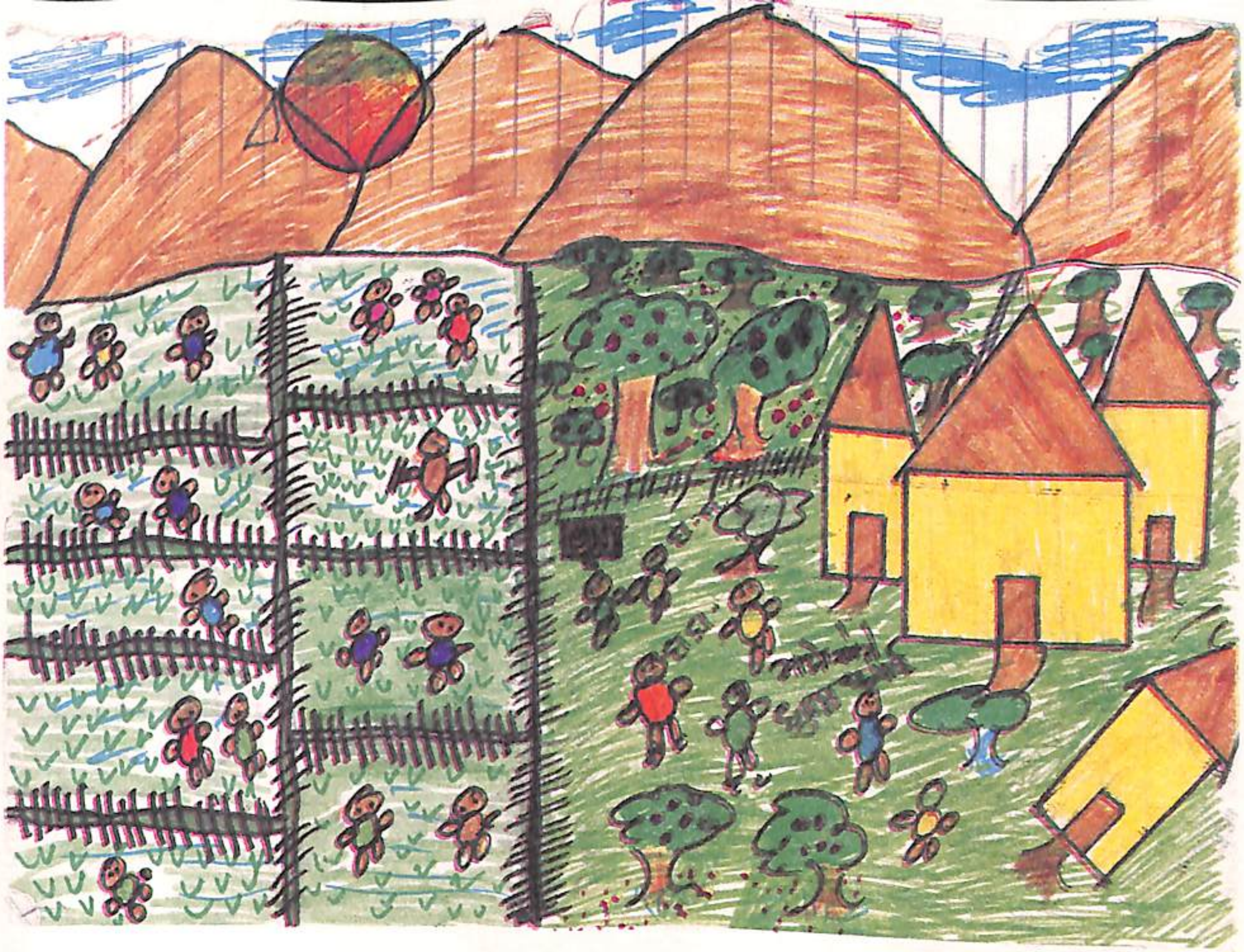
7. सातवीं बार सिक्का उछालने पर चित या पट आने की सम्भावना बराबर-बराबर है।

8. 1. लड़की के फ्रॉक में बिन्दियों के ऊपर दो की जगह एक ही लाइन है।
   2. खिलौने वाले बन्दर के कान काले हो गए हैं।
   3. बन्दर पकड़े बच्चे के कुर्ते की बाँहों में धारियाँ हैं।
   4. तोते की कंठी भूरी हो गई है।
   5. बीच में बैठा बच्चा मुँह बनाने के बजाय मुस्कुरा रहा है।

साँ	ची	का	स्तू	प		बु		घा
प				का	ली	न		ट
म	ज़	ह	ब			क	र	घा
रे		वि		बि	हा	र		ट
ला	ल		का		य		ढा	का
ठी		म	न	न		पी		पा
न	जा	त			क	र	ध	नी
टू		दा	नि	श				पी
टे		न		म	क्खी	मा	र	ना

वर्ग पहेली 74 का हल

वर्ग पहेली - 74 के सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक हैं – लक्ष्मण सिंह क्षत्री, कोरजा, बिलासपुर; कमलेश्वर डहरे, डगेश्वर प्रसाद, मालिक राम, गैत राम यादव, बागबाहरा, रायपुर; नेहा सिंगारे, सारणी, बैतूल; पद्मा श्रीवास्तव, सिंहपुर, शहडोल; शेख एजाजुद्दीन, शिवचरण नागर, बोरखेड़ीकलाँ, नीमच, मन्दसौर; **सभी म.प्र.**। ताराचन्द्र, डाबरखुर्द, दौसा, **राजस्थान**। इन्हें चकमक का नवम्बर का अंक उपहार में भेजा जा रहा है।



प्रकाश कुलहरी, झुंझुनू, राजस्थान



पार्थिक तनेजा, पाँचवीं, रामपुर, जबलपुर, मध्यप्रदेश

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/97



रूपाली साहू, पहली, उदयपुर, राजस्थान

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना